गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

सत्यमेव जयते

26 जनवरी 2010 (माघ 6, शक संवत् 1931)

26 January 2010 (6 Magha, Saka Samvat 1931)

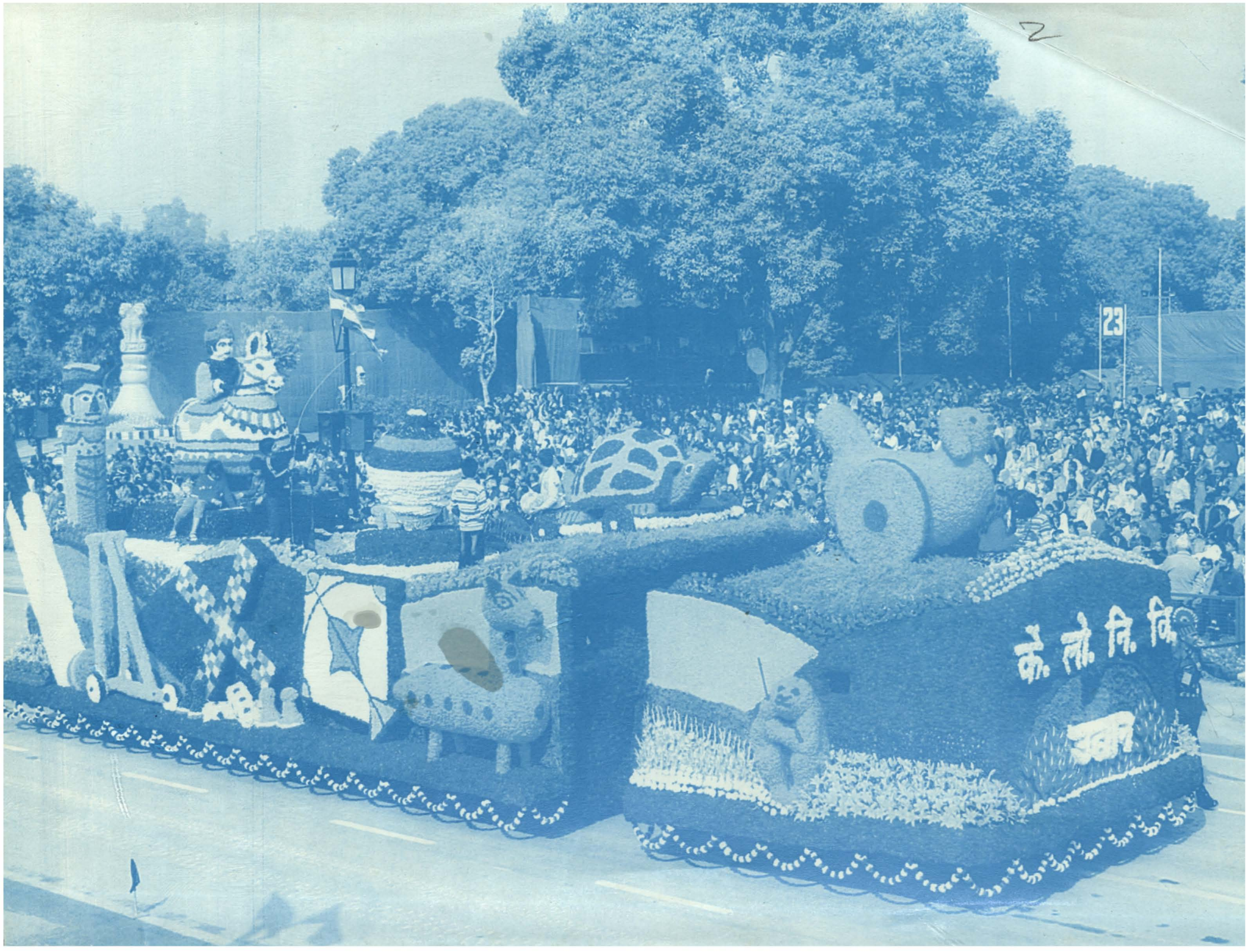

23
के. लो. नि. वि.

कार्यक्रम

0957 बजे	राष्ट्रपति का, मुख्य अतिथि, कोरिया गणराज्य के राष्ट्रपति के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की अगवानी।
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।
	राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि को उनके आसनों की ओर ले जाते हैं।
	राष्ट्र–ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।
	गणतंत्र परेड आरंभ होती है।
	सांस्कृतिक झांकी।
	मोटर साइकलों पर करतब।
	विमानों द्वारा सलामी।
	राष्ट्रीय सलामी।
	राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

Programme

0957 hours	The President, accompanied by the Chief Guest, the President of the Republic of Korea, arrives in State.
	The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.
	The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, the Raksha Mantri, the Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and the Defence Secretary.
	The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the Rostrum. The Prime Minister leads the President and the Chief Guest to their seats.
	The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.
	The Republic Day Parade commences.
	The Cultural Pageant.
	Motorcycle Display.
	Fly-past.
	National Salute.
	The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकाप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप–कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

सेना

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

एम बी टी अर्जुन टैंक

स्मर्च लांचर
मल्टीपल रॉकेट लांच सिस्टम

कवचित इंजीनियर टोही वाहन

सर्वत्र

इन्फैंट्री युद्धक वाहन आधारित संचार वाहन

समयुक्ता

आई सी वी बी एम पी – II

एम्बुलैंस ट्रैक्ड

उन्नत हल्के हेलिकाप्टरों द्वारा सलामी

The Order of March

Showering of flower petals by IAF Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

MBT Arjun Tank

Smerch Launcher
Multiple Rocket Launch System

Armoured Engineer Recce Vehicle

SARVATRA

Infantry Combat Vehicle based Comn. Veh.

Samyukta

ICV BMP-II

Ambulance Tracked

Fly past by Advanced Light Helicopters

मार्च करती टुकड़ियां

गार्ड्स बिग्रेड

सेना वायु रक्षा केन्द्र : बैंड धुन
मद्रास इंजीनियर ग्रुप "प्रगति"

मद्रास रेजिमेंट

जाट रेजिमेंट

बंगाल इंजीनियर ग्रुप : बैंड धुन
गार्ड्स बिग्रेड "सैम बहादुर"

सिख रेजिमेंट

डोगरा रेजिमेंट
पंजाब रेजिमेंटल केन्द्र : बैंड धुन
मद्रास रेजिमेंटल केन्द्र "हंसते लुसाई"

बिहार रेजिमेंट

4 गोरखा रेजिमेंट

राजपूताना राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर : बैंड धुन
गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर "जनरल टप्पी"

प्रादेशिक सेना

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड : बैंड धुन
मार्च करती सैन्य टुकड़ी "जय भारती"
झांकी : शिवालिक क्लास स्टेल्थ फ्रिगेट

वायुसेना

वायुसेना बैंड : बैंड धुन
मार्च करती वायु सेना टुकड़ी "स्पेस फ्लाइट"

वाहन दस्ता : हम राष्ट्र का सर्वोत्तम–कठोरतम प्रशिक्षण देते हैं

Marching Contingents

The Brigade of the Guards

Army Air Defence Centre : Band playing
Madras Engineer Group *'Pragati'*

Madras Regiment

Jat Regiment

Bengal Engineer Group : Band playing
The Brigade of the Guards *'Sam Bahadur'*

Sikh Regiment

Dogra Regiment
Punjab Regimental Centre : Band playing
Madras Regimental Centre *'Hanste Lushai'*

Bihar Regiment

4 Gorkha Regiment

Rajputana Rifles Regimental Centre : Band playing
Garhwal Rifles Regimental Centre *'Gen Tappy'*

Territorial Army

Navy

Naval Brass Band : Band playing
Marching Contingent *'Jai Bharti'*
Tableau : Shivalik Class Stealth Frigate

Air Force

Air Force Band : Band playing
Marching Contingent *'Space Flight'*

Vehicular Column : The Nation's Finest - We Train the Hardest

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, उपस्कर टुकड़ी

हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) – 'तेजस'
अग्नि–III मिसाइल
शौर्य मिसाइल
रोहिणी रेडार

पूर्व–सैनिक

जम्मू–कश्मीर राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर एवं 6/8 गोरखा राइफल्स (इन्फैंट्री बटालियन) : बैंड धुन "वीर भारत"

पूर्व–सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्ध–सैनिक एवं अन्य सहायक सिविल बल

बीएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी : बैंड धुन
बैंड : सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) "विजय भारत"

बीएसएफ ऊंटों की टुकड़ी : बैंड धुन
बैंड : बीएसएफ ऊंट "हम हैं सीमा सुरक्षा बल"

असम राइफल्स की मार्च करती टुकड़ी : बैंड धुन
बैंड : असम राइफल्स "असम राइफल्स का गीत"

तटरक्षक बल की मार्च करती टुकड़ी

बैंड : केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल : बैंड धुन
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती टुकड़ी "सेवा भक्ति का यह प्रतीक"

बैंड : भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन
आईटीबीपी की मार्च करती हुई टुकड़ी "कदम–कदम बढ़ाए चल"

बैंड : केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन
सीआईएसएफ की मार्च करती टुकड़ी "कदम–से–कदम बढ़ाए जा"

DRDO Equipments Columns

Light Combat Aircraft (LCA) - 'Tejas'
AGNI-III Missile
SHAURYA Missile
ROHINI Radar

Ex-Servicemen

Jammu and Kashmir Rifles Regimental Centre & 6/8 Gorkha Rifles (Infantry Battalion) : Band playing *'Vir Bharat'*

Ex-Servicemen Marching Contingent

Para-Military And Other Auxiliary Civil Forces

BSF Marching Contingent : Band playing
Band: BSF (Border Security Force) *'Vijay Bharat'*

BSF Camel Contingent : Band playing
Band: BSF Camel *'Hum Hai Seema Suraksha Bal'*

Assam Rifles Marching Contingent : Band playing
Band: Assam Rifles *'Assam Rifles' Song'*

Coast Guard Marching Contingent

Band: Central Reserve Police Force : Band playing
CRPF Marching Contingent *'Seva Bhakti Ka Yeh Prateek'*

Band: Indo-Tibet Border Police : Band playing
ITBP Marching Contingent *'Kadam-Kadam Badhaye Chal"*

Band: Central Industrial Security Force : Band playing
CISF Marching Contingent *'Kadam-se-Kadam Badhaye Ja'*

बैंड : सशस्त्र सीमा बल एसएसबी की मार्च करती टुकड़ी	:	बैंड धुन ''जोश भरा है सीने में''
बैंड : रेलवे सुरक्षा बल आरपीएफ की मार्च करती टुकड़ी	:	बैंड धुन ''विजय भारत''
बैंड : दिल्ली पुलिस दिल्ली पुलिस की मार्च करती टुकड़ी	:	बैंड धुन ''दिल्ली पुलिस''

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी	:	बैंड धुन ''कदम–कदम बढ़ाए जा''
बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी	:	बैंड धुन ''सारे जहां से अच्छा''

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

सामूहिक पाइप और ड्रम : बैंड धुन ''कदम–कदम बढ़ाए जा''

राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती टुकड़ी

Band: Sashastra Seema Bal SSB Marching Contingent	:	Band playing *'Josh Bhara Hai Seene Mein'*
Band: Railway Protection Force RPF Marching Contingent	:	Band playing *'Vijay Bharat'*
Band: Delhi Police Delhi Police Marching Contingent	:	Band playing *'Delhi Police'*

National Cadet Corps (NCC)

Band: NCC Boys Boys Marching Contingent	:	Band playing *'Kadam-Kadam Badhaye Ja'*
Band: NCC Girls Girls Marching Contingent	:	Band playing *'Sare Jahan Se Achchha'*

National Service Scheme (NSS)

Massed Pipes and Drums : Band playing *'Kadam-Kadam Badhaye Ja'*

National Service Scheme Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकियां — इक्कीस

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम : पांच

डोलू कुनिथा

विरामहीन प्रवाह

राजस्थानी लोक नृत्य

वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सहयोग

तमांग सेलो नृत्य

मोटर साइकिलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग

* मौसम अनुकूल रहने पर।

The Cultural Pageant

Tableaux - Twenty one

National Bravery Award Winning Children in open jeeps

Children's Pageant

School Children Items: Five

Dollu Kunitha

Viraamheen Pravaah

Rajasthani Folk Dance

Globalisation, International Peace and Cooperation

Tamang Selo Dance

Motorcycle Display : Border Security Force

Fly-past *

Release of balloons : India Meteorological Department

* *If weather conditions permit.*

9

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 61वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की द्योतक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति नागरिकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झांकियों का क्रम–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

Cultural Pageant

Today, India is celebrating the 61st Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

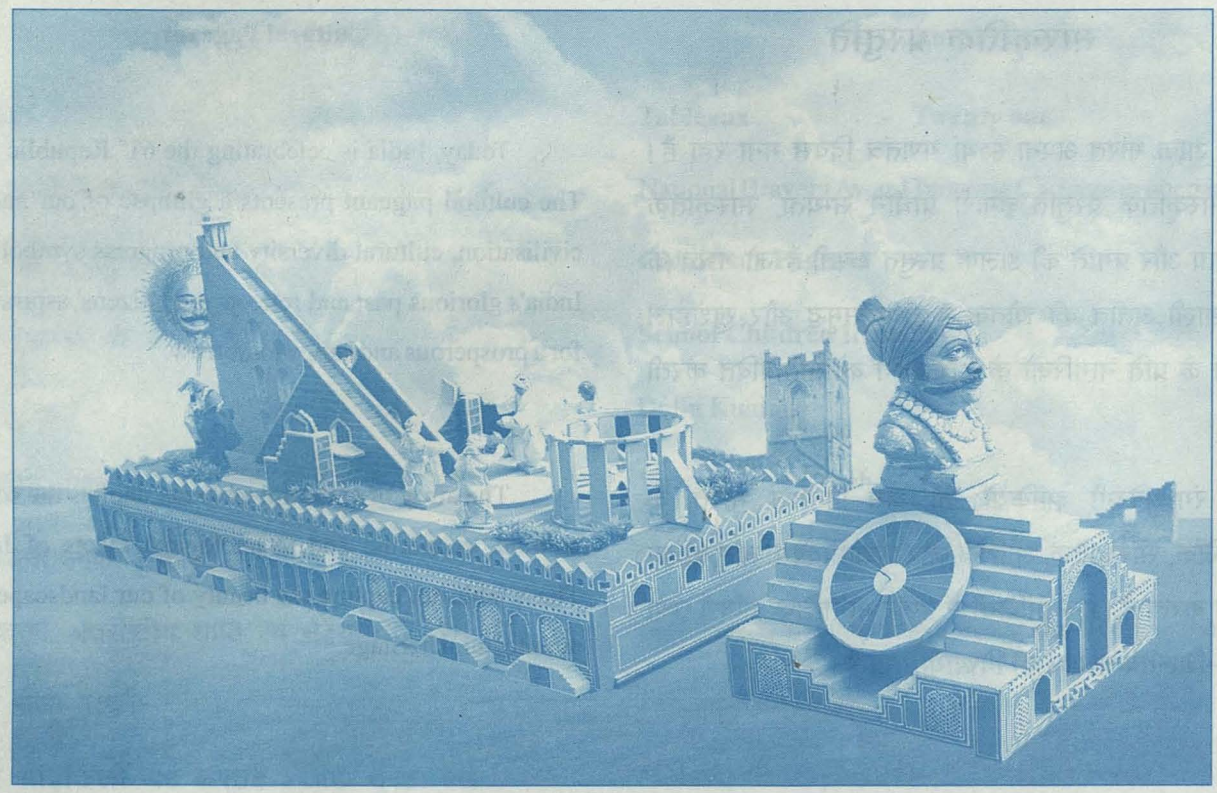

खगोलीय वेधशाला (जन्तर मन्तर, जयपुर)

जयपुर में ज्यामितीय गुलाबी शहर की स्थापना करने वाले महाराजा सवाई जय सिंह एक महान खगोलज्ञ थे। उन्हें बचपन से ही खगोलविद्या में दिलचस्पी थी। उन्होंने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में खगोलीय वेधशालाओं की स्थापना की। जयपुर स्थित सबसे बड़ी वेधशाला का निर्माण 1734 में पूरा हुआ। जयपुर वेधशाला अंतरिक्ष संबंधी चर्चाओं, खगोलीय सर्वेक्षणों और पंचांग तथा कैलेंडर बनाने का स्थान बन गया। जयपुर वेधशाला में निम्नलिखित उपकरण उपलब्ध हैं : "सम्राट यंत्र" जो जयपुर का स्थानीय समय बताता है जिसे अपेक्षित विक्षेप का प्रयोग करके भारतीय मानक समय में बदला जा सकता है "व्रहत सम्राट" सूरज की रोशनी में 2 सैकेंड के समय अंतराल तक की माप को संभाव्य बनाता है। "ध्रुव वेद पट्टिका" इसका नाम ध्रुव तारे को प्रकट करता है जिसे रात में देखा जा सकता है।

राजस्थान की झांकी में 18वीं सदी के स्मारक को पूरी भव्यता और सौंदर्य के साथ दिखाया गया है।

Astronomical Observatory (Jantra Mantar, Jaipur)

Maharaja Sawai Jai Singh, the founder of Geometrical Pink City Jaipur, was a great astronomer. He had great interest in Astronomy from his childhood. He founded astronomical observatories in Delhi, Jaipur, Ujjain, Varanasi and Mathura. The biggest amongst those at Jaipur was completed in 1734. The Jaipur observatory became a venue for Astronomical discussions, celestial observations and to prepare almanac and calendars. The following instruments are available in Jaipur observatory: '*Samrat Yantra' (Small Sundial)* reveals local time of Jaipur which can be converted into Indian standard time by using the required latitude. '*Vrahat Samrat'* makes it probable for measurement of upto 2 seconds time during the sun light. '*Dhruva Vedh Pattika'*, its name reveals Polo Star which can be observed in the Night.

The tableau of Rajasthan showcases the 18th century monument with all its grandeur and beauty.

राजस्थान ***Rajasthan***

हियांग तनबा

"हियांग तनबा" का शाब्दिक अर्थ नौका दौड़, एक प्राचीन पारंपरिक कांगला के थांगापट की खाई जो मणिपुर का एक प्राचीन महल है, में की जाती है। यह खेल धार्मिक कार्यों से जुड़ा हुआ है। नौका को "हियांग हिरेन" कहा जाता है जो आध्यात्मिक शक्तियों से सज्जित मानी जाती है और मेटीस का विश्वास है कि हियांग हिरेन की पूजा से वे सभी बुराइयों से बच सकेंगे। इस संस्कार के पूरा होने के बाद राजा के नेतृत्व में एक हियांग हिरेन और दूसरा एक शाही गणमान्य व्यक्ति के नेतृत्व में, जो विभिन्न पाना, जैसे कि लाइफाम पाना बनाम खबाम पाना आदि पर आधारित होता है, राज्य की समृद्धि के लिए दौड़ की स्पर्धा करते हैं।

मणिपुर की यह झांकी दो पानाओं के बीच हियांग तनबा के प्रदर्शन को दिखाती है। झांकी का अग्र भाग "पखांगबा" की मूर्ति दिखाता है जो भगवान का अवतार है।

मणिपुर

Hiyang Tanba

'Hiyang Tanba' meaning boat race, is an ancient traditional game of Meiteis performed in the boat of Thangapat at Kangla, the ancient palace of Manipur. The game is associated with religious rites. The boat called 'Hiyang Hiren' is regarded to be invested with spiritual powers and the Meiteis believed that worship of Hiyang Hiren will protect them from the evils. After completion of the rites, one Hiyang Hiren led by the King and another by a royal dignitary person based on different panas, such as Laipham Pana Vs. Khabam Pana, etc. will compete the race for the prosperity of the kingdom.

The tableau of the Manipur state shows the performance of Hiyang Tanba between the two panas. The tractor portion of the tableau depicts a statue of "Pakhangba", the incarnation of God.

Manipur

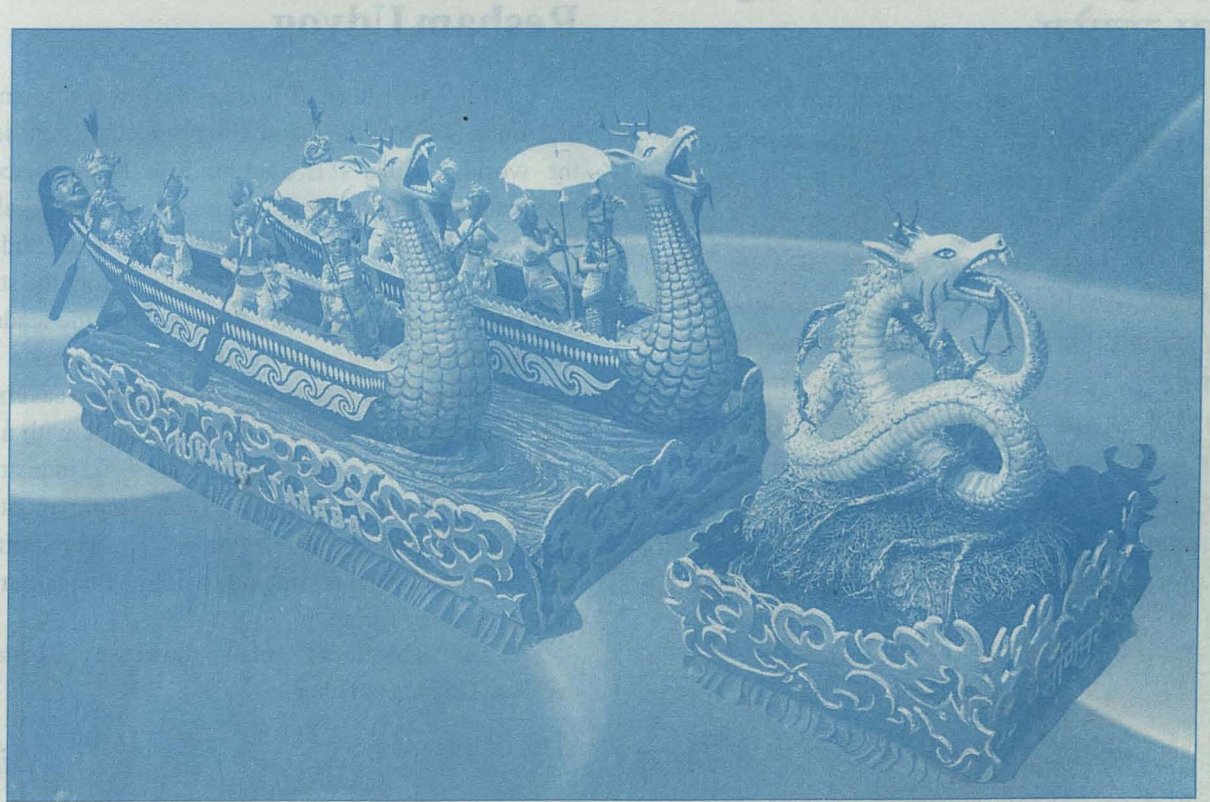

12

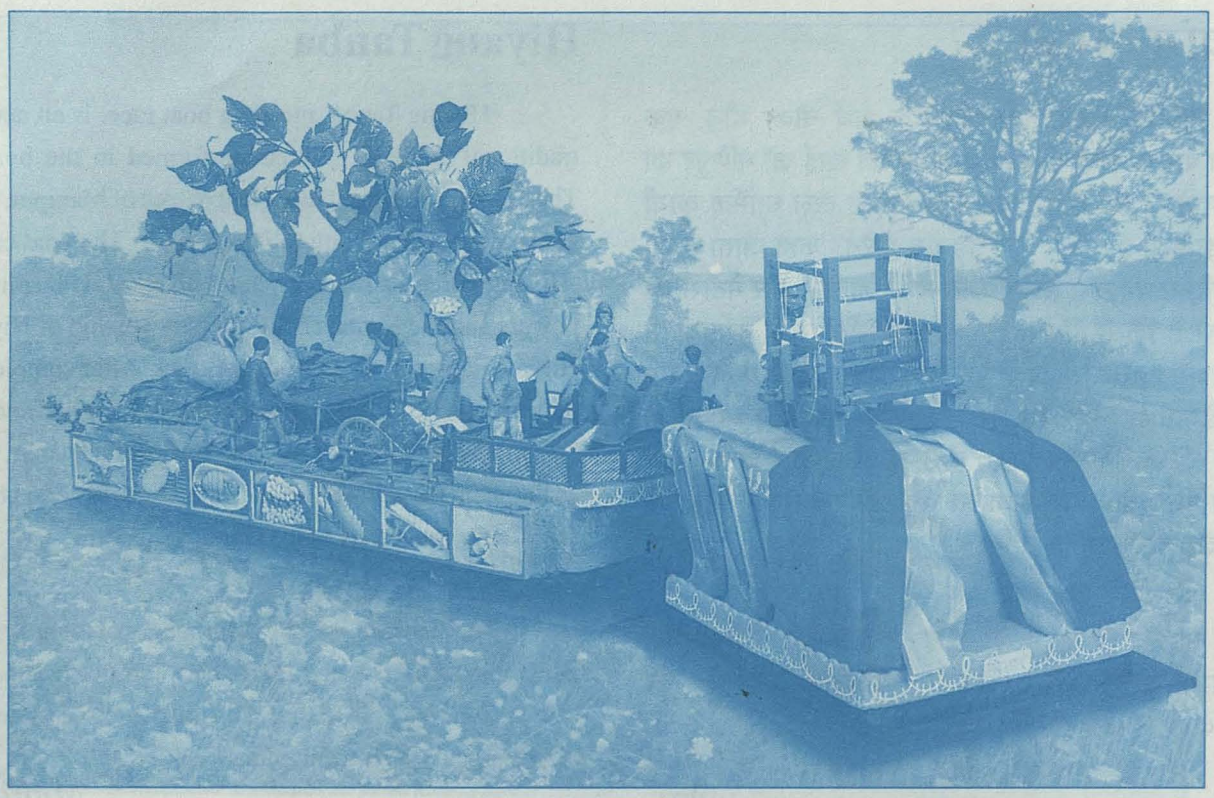

भागलपुर की लोक–संस्कृति : रेशम उद्योग

वस्त्रों की रानी – रेशम हमेशा से सभी का मन मोहती रही है। विश्व में रेशम का सर्वाधिक उत्पादन करने वाले देशों में भारत का स्थान आता है। रेशम के क्षेत्र में बिहार का भागलपुर रेशम का स्थान अतिविशिष्टता और गौरव के साथ आता है। भागलपुरी रेशम अनोखा, शानदार और रोमानी अहसास कराता है। यह महीन कपड़ा, जो एक प्यारे कीड़े के रेशे से बनाया जाता है, भारतीय वस्त्रों में सर्वोच्च माना जाता है। भागलपुरी रेशम में चिकनापन और भव्य चमक होती है। भागलपुर के जुलाहे रेशम की उत्कृष्ट गुणता और रंगों के वैविध्य में निपुण हैं। भागलपुर रेशम उद्योग ने रोजगार के उल्लेखनीय अवसर पैदा किए हैं और काफी बड़ी एवं टिकाऊ अर्थव्यवस्था बनाई है। भागलपुर के रेशम की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है। भागलपुर रेशम वास्तव में बिहार की शान है।

बिहार की झांकी बिहार के भागलपुर रेशम उद्योग का प्रदर्शन करती है।

बिहार

Bhagalpur Ki Lok Sanskriti: Resham Udyog

Silk – the queen of Textiles has always fascinated all. India is one of the major silk producing countries of the world. Bihar's Bhagalpur Silk has a place of distinction and pride in the realm of Silk. Bhagalpuri Silk whispers of the exotic, the luxurious and the romantic. This sensuous cloth, conjured from the strand of a lovely worm, has reigned supreme as the leader of Indian textiles. Bhagalpuri Silk is synonymous with sleek and lustrous splendour. Bhagalpur weavers are experts in creating excellent quality of Silk with a fine finish and a variety of colours. The Silk industry of Bhagalpur has generated remarkable employment and sizeable and sustainable economy. The popularity of Bhagalpur Silk is increasing day by day. Bhagalpur Silk indeed is Bihar's pride.

The tableau of Bihar showcases Bhagalpur Resham Udgyog of Bihar.

Bihar

13

डब्बेवाला

"डब्बावाला" का शाब्दिक अर्थ डब्बा लिए एक व्यक्ति होता है। डब्बावाले, कार्यालय में काम करने वाले व्यक्तियों के घर से ताजा बने भोजन के लंच बॉक्सों को इकट्ठा करने और संबंधित कार्यस्थल पर उनको बांटने तथा खाली डब्बों को वापस देने का अनोखा कार्य परिवहन के विभिन्न माध्यमों का इस्तेमाल करके करते हैं। वास्तव में मुम्बई में यह अति विशिष्ट सेवा है और प्रतिकूल मौसम में, जैसे कि मुम्बई की मानसून वर्षा, में भी यह सेवा बिना रुकावट के चलती है। लगभग 5,000 डब्बावाले तकरीबन 200,000 लंच बॉक्स प्रतिदिन लाते–ले जाते हैं। हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार 6,000,000 डब्बों की आपूर्ति में से एक ही में गलती होती है। वर्ष 2007 में न्यूयार्क टाइम्स में समाचार प्रकाशित हुआ था कि 125 वर्ष पुराना डब्बावाला उद्योग 5–10% प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रहा है।

अपनी झांकी के माध्यम से महाराष्ट्र राज्य मुम्बई में डब्बावाला की विशिष्ट सेवा की झलक प्रदर्शित करती है।

महाराष्ट्र

Dabbewala

'Dabbawala', is literally meaning a person with a box. Dabbawala is employed in a unique service of collecting freshly cooked food in lunch boxes from the residences of the office workers, for delivering it to them in their respective workplaces and returning the empty boxes by using various modes of transport. It is actually a highly specialized service in Mumbai and is uninterrupted even on the days of severe weather such as Mumbai's characteristic monsoon rain. Approximately 200,000 lunch boxes get moved every day by an estimated 5,000 *dabbawalas*. According to a recent survey, there is only one mistake in every 6,000,000 deliveries. The New York Times had reported in 2007 that the 125 years old *dabbawala* industry continues to grow at a rate of 5-10% per year.

Through their tableau, the State of Maharashtra presents the specialised service of the Dabbawala in Mumbai.

Maharashtra

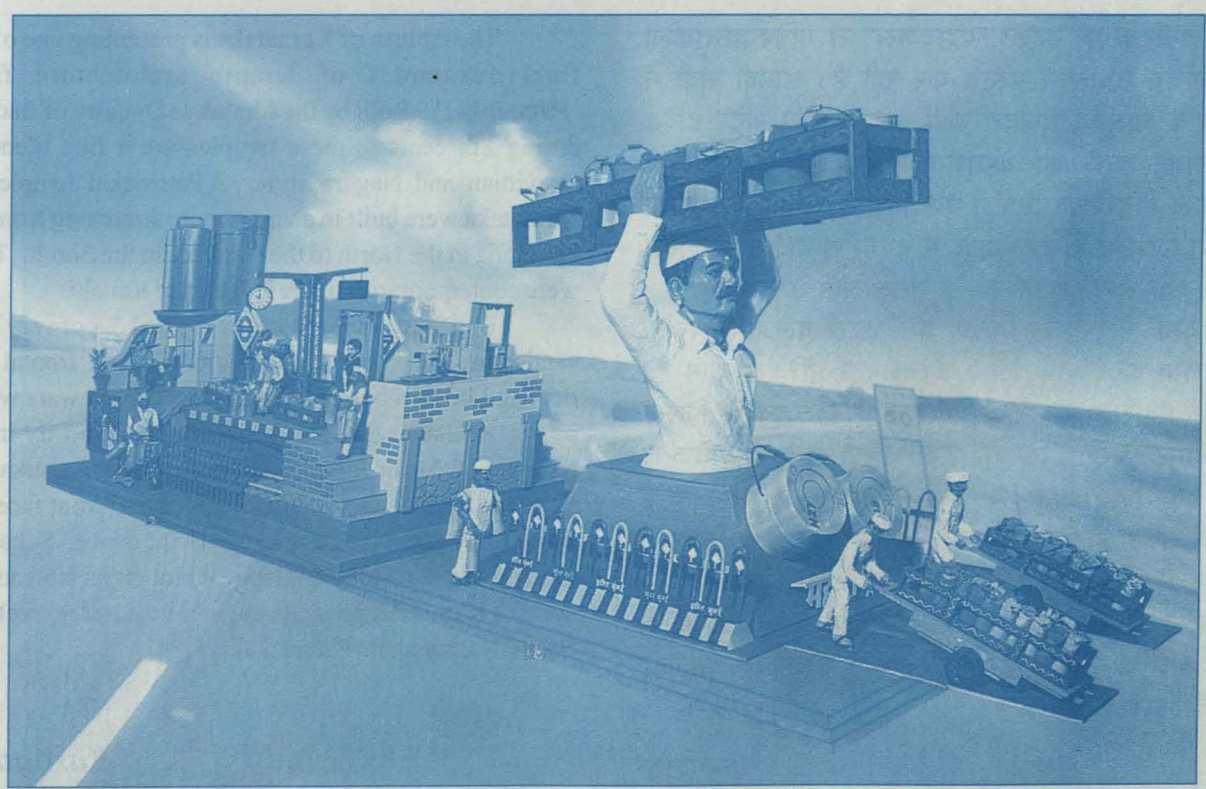

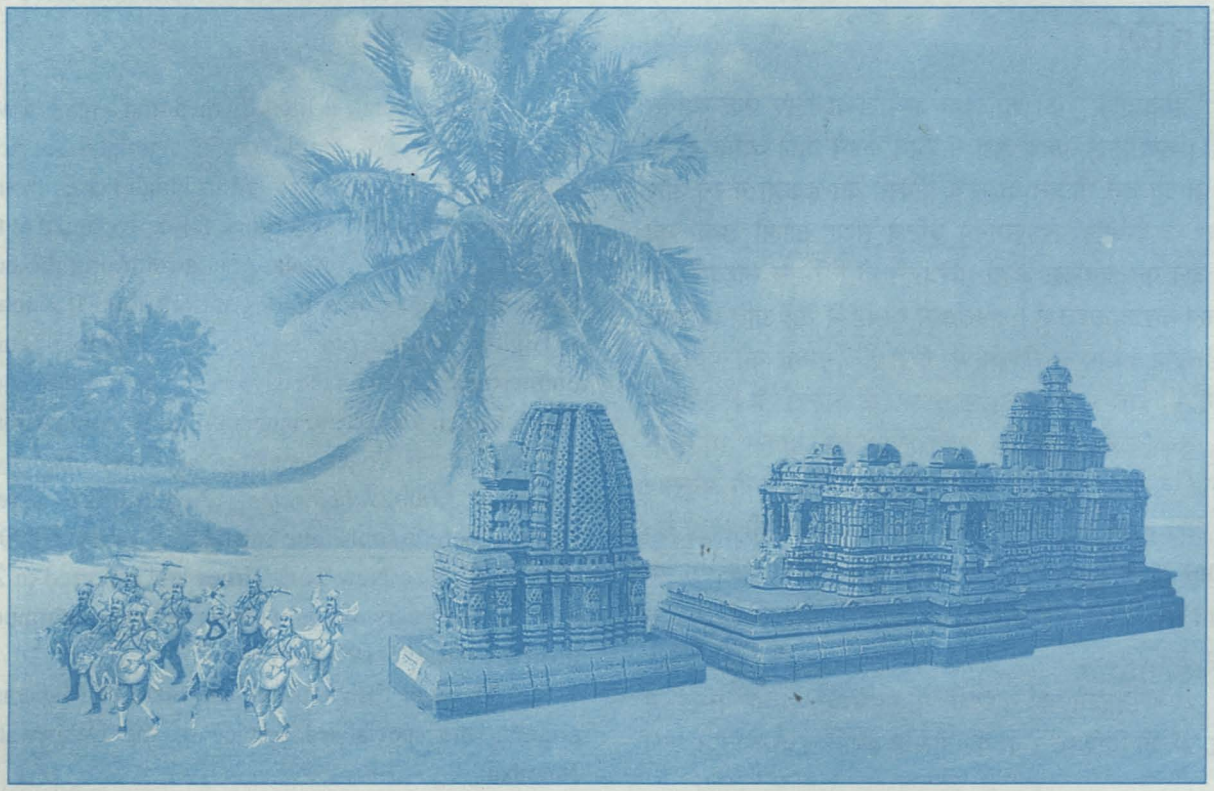

पट्टादकल

कर्नाटक की झांकी "पट्टादकल" से मंदिर वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। आठवीं सदी में बादामी के चालुक्य राजवंश द्वारा बनाए गए ये मंदिर द्रविड़ और नागर शैली का बेहतरीन मिश्रण हैं। कर्नाटक के पट्टादकल मंदिरों का निर्माण एक विशाल साम्राज्य में किया गया था जिसका विस्तार उत्तर में नर्मदा से दक्षिण में कावेरी तक था। वह कांची के पल्लवों के समकालीन थे

दोनों मंदिरों का निर्माण बड़े कठोर बलुआ पत्थर से किया गया था जिनपर कार्य करना बड़ा मुश्किल काम है। झांकी में प्रदर्शित आगे वाला मंदिर काशी विश्वेश्वर है जिसमें "रेखानागर" अथवा "विमान" है जो उत्तरी भारत के अधिकतर मंदिरों में पाया जाता है। इसके सामने एक सुकानासा परियोजना को दिखाया गया है और आगे से पेंडेंट जैसी मूर्ति है तथा शिव और पार्वती दिव्य नृत्य करते दिख रहे हैं। सुकानासा में भव्य मुखमंडप है। इस झांकी के माध्यम से कर्नाटक राज्य ने विश्व विरासत स्थल के वास्तुकला चमत्कार का प्रदर्शन किया है।

Pattadakal

The tableau of Karnataka is presenting one of the finest examples of temple architecture from '***Pattadakal***'. Built by the Chalukya Dynasty of Badami during 8th century, these temples are a fine blend of Dravidian and Nagara style. Pattadakal temples of Karnataka were built in a vast empire stretching from the Narmada in the North to the Cauvery in the South. They were contemporaries of the Pallavas of Kanchi.

Both the temples here are created out of very hard sandstone, very hard to work upon. The frontal one depicted in the tableau is the Kashi Vishveshwara which has a 'Rekhanaagara' or 'Vimana' found mostly in the temples of North India. In front of this, a sukanasa projects and has a pendant like sculptured front face and Shiva and Parvati are engaged in divine dance. Sukanasa has a graceful mukhamandapa. Through its tableau, the state of Karnataka presents the architectural marvel of a World Heritage Site Pattadakal.

15

मेघालय की अनोखी स्वदेशी बांस ड्रिप सिंचाई व्यवस्था

मेघालय में झरनों/धारा के पानी को बांस का इस्तेमाल करके पौधों की सिंचाई करने की देशी पद्धति व्यापक रूप से प्रचलित है। यह इतनी अच्छी पद्धति है कि इससे प्रति मिनट 18–20 लीटर पानी कई सौ मीटर की दूरी तय करता है और अंत में पौधों में पहुंचने पर वह पानी कम होकर केवल 20–80 बूंद प्रति मिनट ही पहुंच पाता है।

"खासी" और "जयंतिया" पहाड़ियों के आदिवासी किसान सुपारी के बागों अथवा मिश्रित बागों में लगाई गई पान अथवा काली मिर्च की फसलों की सिंचाई के लिए इस 200 वर्ष पुरानी पद्धति का प्रयोग करते हैं। बांसों का इस्तेमाल पहाड़ियों की चोटियों पर सदाबहार झरनों के पानी को गुरूत्व द्वारा निम्न स्थलों पर पहुंचाया जाता है जहां बिना रिसाव के शाखाओं में इसका वितरण होता है, इसे विभिन्न प्रकार के बांसों से पुनः बनाया जाता है और अंतिम चैनल से पानी पौधे की जड़ों के पास गिरता है।

मेघालय

Unique indigenous Bamboo Drip Irrigation System of Meghalya

In Meghalaya, an indigenous system of tapping of stream / spring water by using bamboo pipes to irrigate plantations is widely prevalent. It is so perfect that about 18-20 litres of water entering the bamboo pipe system per minute gets transported over several hundred metres and finally gets reduced in 20-80 drops per minute at the site of the plant.

The tribal farmers of 'Khasi' and 'Jaintia' Hills use the 200 year old system to irrigate the betel leaf or black pepper crops planted in areca nut orchards or in mixed orchards. Bamboo pipes are used to divert perennial springs on the hilltops to the plot site at the lower reaches by gravity where it is distributed without leakage into branches, again made and laid out with different forms of bamboo pipes with the last channel section enabling the water to be dropped near the roots of the plant.

Meghalaya

भारत के संगीत गौरव–कुमार सचिन देव बर्मन

1 अक्तूबर 1906 को जन्मे संगीतज्ञ सचिन देव बर्मन त्रिपुरा के तत्कालीन शाही परिवार से संबंध रखते थे। युवा सचिन देव ने अपने पिता नवद्वीप चंद्र देव बर्मन से शास्त्रीय संगीत सीखा और उसके बाद उस्ताद बादल .खान और भीष्मदेव चटोपध्याय से प्रशिक्षण लिया। भारतीय लोक संगीत में उनकी पकड़, उनका ठोस शास्त्रीय आधार और अपने आस–पास के माहौल में ढल जाने की उनकी क्षमता ने उन्हें भारतीय फिल्म संगीत में महानतम सर्वतोमुखी व्यक्ति बना दिया। धुनें उनके पास स्वयं चली आती थीं और वे धुनें तैयार करने के लिए कभी भी हारमोनियम पर नहीं बैठे। एस.डी. बर्मन ने 89 हिंदी और 31 बांग्ला फिल्मों के लिए संगीत दिया। वे "नाविक गीतों" के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे जिसे बंगाली में "भटियाली" कहा जाता है। लोग हिंदी और बंगाली दोनों में उन गीतों को आज भी गुनगुनाते हैं। एस.डी. बर्मन ने अपने पीछे युवा पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध विरासत छोड़ी है। त्रिपुरा राज्य अपनी झांकी के माध्यम से इस महान संगीतकार को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

त्रिपुरा

India's Pride Melody Maestro-Kumar Sachin Deb Burman

Maestro Sachin Deb Burman born on 1 October, 1906 belonged to the erstwhile royal family of Tripura. The young Sachin Deb underwent classical training from his father Nabadwip Chandra Deb Burman and later trained under Ustad Badal Khan and Bhishmadev Chattopadhyay. His grip on Indian folklore, his sound classical base, his capacity to absorb from the scene around him made him the greatest all-rounder in Indian film music. His tunes would come to him in a flash and he never sat down on a harmonium to compose. S. D. Burman scored music for 89 Hindi and 31 Bengali movies. He was particularly famous for "Boat Songs" which is called "*Bhatiyali*" in Bengali. People still hum those songs both in Hindi and Bengali. S. D. Burman left behind a rich legacy for the younger generations. Through its tableau, the state of Tripura pays a rich tribute to the great musician.

Tripura

17

जम्मू कश्मीर का हस्तशिल्प

बहु–जाति, बहु–भाषा, बहु–पंथ और विविध भूमि वाले राज्य जम्मू और कश्मीर में तीन विशेष रूप से पृथक क्षेत्र जम्मू, कश्मीर और लद्दाख हैं।

जम्मू–कश्मीर राज्य द्वारा अपनी झांकी के माध्यम से शिल्पों की विविधता और इनकी प्रसंस्करण प्रक्रिया तथा उत्पादों की विभिन्नता दर्शाई जा रही है जिसने विश्व में अपनी समृद्धि की छाप छोड़ी है। जिसमें कनीशाल, लकड़ी पर नक्काशी, पेपर माशी, विलो–वर्क, कालीन बुनाई, चेन स्टिच, शालें आदि हैं। झांकी में अनूठे शिल्प का चित्रण करते हुए यह दर्शाया जा रहा है कि कैसे परम्परागत रूप और डिजाइन, प्रकृति के साथ शिल्पकार की घनिष्ठता के साक्षी हैं एवं अपने परिवेश के रंग और रूपों की प्रचुरता के प्रति उसके मन में कितना आकर्षण एवं प्रेम है।

J&K-Handicrafts

Jammu and Kashmir, a state of multi-race, multi-language, multi-religion and diverse land, consists of three distinctly separate regions– Jammu, Kashmir and Ladakh.

Through its tableau, the state of Jammu and Kashmir is showing range of crafts and its process, the variety of products which has made the mark in its richness in the world, may it be Kanishawl, wood carving, paper-machie, willow-work, carpet-weaving, chain-stitch, shawls etc. Tableau is depicting exotic crafts showing how the traditional patterns and designs bear witness to the artisan's affinity with nature and his awe and admiration for the abundance of colour and forms found in its own environment.

जम्मू–कश्मीर

Jammu and Kashmir

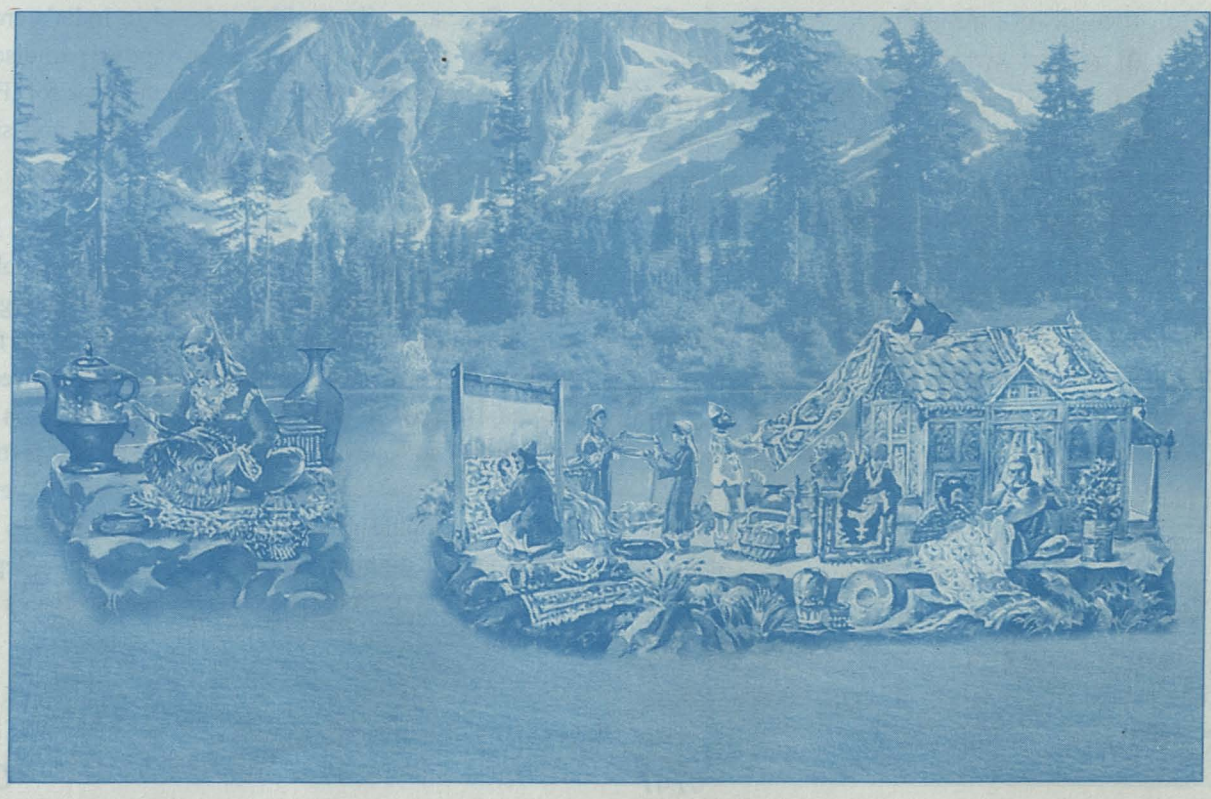

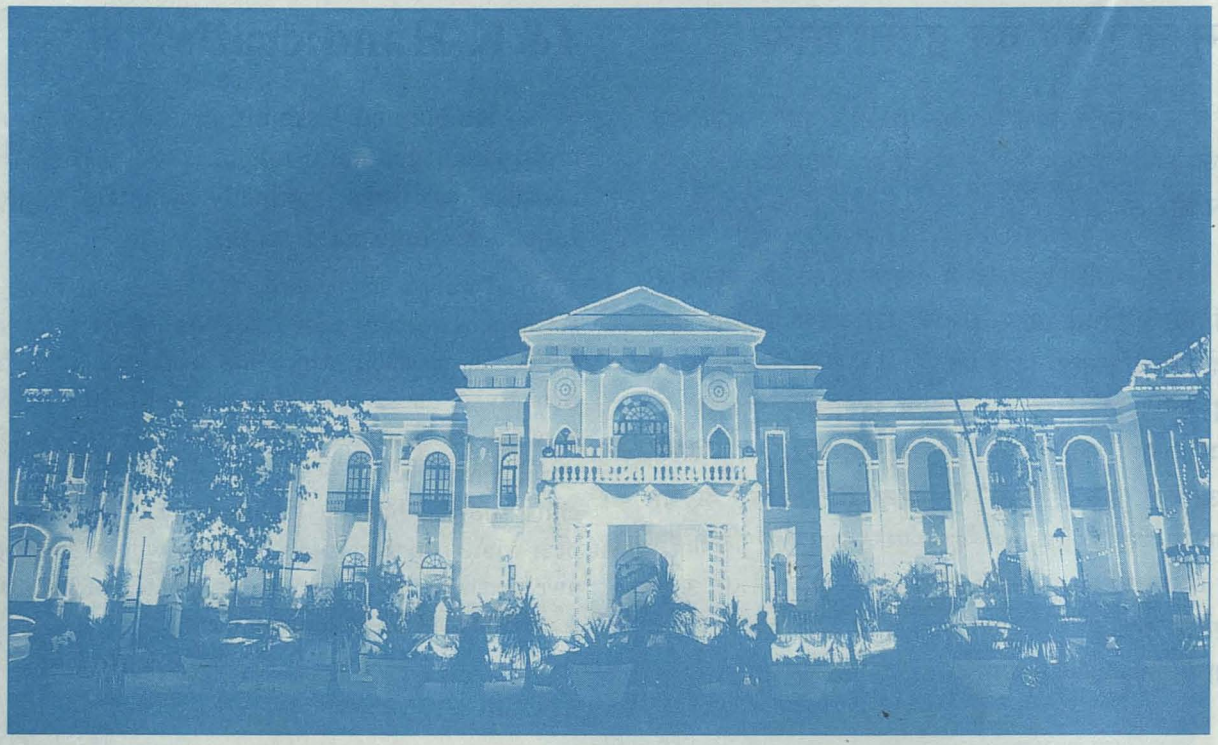

गोवा में भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव

गोवा, भारत के ताज की छोटी परंतु चमकती हुई मणि है, जिसने धरती पर दूसरे स्वर्ग के रूप में सारे विश्व में प्रसिद्धि पाई है। गोवा में 2004 में भारत अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव आयोजित किया गया था तब से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के लिए यह एक स्थायी स्थान बन गया है और यह हर वर्ष भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव की मेजबानी करता आ रहा है।

गणतंत्र दिवस परेड 2010 के लिए इस झांकी का विषय "गोवा में भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव" है। भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के सुप्रसिद्ध प्रतीक चिन्ह के चारों ओर घूम रहा राजसी सुनहरा मोर झांकी के अग्रभाग के सबसे ऊपर दिखाई दे रहा है जो अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा के रुपहले पर्दे के जीवन की सजीवता प्रदर्शित करता है। इसके पीछे राजसी जीएमसी हेरिटेज बिल्डिंग है जो 10 दिन के पूरे उत्सव के दौरान सभी के आकर्षण का केंद्र रहती है। यह इमारत अब भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के स्थान के केंद्र बिंदु के रूप में है जिसके सामने फिल्म की प्रसिद्ध हस्तियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों का "भव्य स्वागत" किया जाता है। इसमें प्रदर्शित कलाकार विदेशी शिष्ट मंडलों और स्थानीय लोक कलाकारों के सांस्कृतिक सामंजस्य को प्रदर्शित करते हैं।

IFFI in Goa

Goa, a small but shining jewel in India's crown had earned fame the world over as another paradise on earth. Goa has been made a permanent venue for IFFI - International Film Festival of India in 2004 and since then it has been hosting IFFI every year.

The theme of the tableau for the Republic Day Parade-2010 is 'IFFI in Goa'. The majestic Golden peacock revolving round the all-familiar IFFI logo is seen mounted atop the front tractor which colourfully displays international cinema's reel life. It is followed by the majestic GMC Heritage Building, which is the cynosure of all eyes during the entire 10 day festival. This building now serves as the focal point of IFFI venue, in front of which is given a 'red carpet welcome' to film celebrities and dignitaries. The ground pageantry depicts the cultural synchronization of foreign delegates and local folk artist.

19

कोटमसर गुफाएं

कोटमसर गुफाएं छत्तीसगढ के कांगेड़ घाटी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित हैं। स्थानीय बोली में कोटमसर का अर्थ "जल से घिरा किला है"। कोटमसर गुफाओं के अंदर और आसपांस पाए गए अवशेषों से यह संकेत मिलता है कि पाषाण युग से वर्षों पहले यह क्षेत्र जल से घिरा हुआ था। जिन छोटी पहाड़ियों में ये गुफाएं अवस्थित हैं वे लगभग 2500 मिलियन वर्ष पुरानी हैं और चूना–पत्थर से बनी हैं। यह गुफा पार्श्व सीमा में लगभग 330 मीटर लंबी और 20 से 70 मीटर चौड़ी है जिसमें अनेक सुविकसित कक्ष और रास्ते हैं। गुफाओं की दीवारों और तल पर बने आरोही निक्षेप (स्टैलॅक्टाइट) और निलंबी निक्षेप (स्टैलॅग्माइट) ढांचे विश्व में अनूठे और लाजवाब हैं। रिसता हुआ पानी विभिन्न आकृतियों तथा रंगों के निक्षेपों के साथ गुफाओं को सजाता है। ये खनिज निक्षेप जिसमें अधिकांशतया कैल्शियम कार्बोनेट, जिप्सम और हेलाइट हैं जो वर्षा में गुफा की सतह से रिसकर और छत के टपकने से बनते हैं।

छत्तीसगढ की इस झांकी में प्राचीन गुफाओं के पुरातन सौंदर्य का चित्रण किया गया है।

Kotumsar Caves

Kotumasar caves are situated in Kanger Valley National Park of Chhatisgarh. In local dialect, Kotumasar means 'Fort surrounded by water'. Remains found in and around the Kotumasar caves suggest that many years before Stone Age, this area was surrounded by water. The hillocks, in which these caves located, are made of limestone which is nearly 2500 million years old. This cave is around 330 metres long in lateral extent with several well developed chambers and passages up to 20 to 70 metres wide. Stalactites and Stalagmites structures on the walls and floor of the caves are unique and unparalleled in the world. Seeping water decorates caves with deposits of various shapes and colours. These are mineral deposits, mostly calcium carbonate, gypsum and halite formed by action of rain, percolating through the cave surface and dripping from the ceiling.

The tableau of Chhatisgarh depicts the pristine beauty of the ancient caves.

छत्तीसगढ

Chhatisgarh

20

पदायनी

"पदयानी" एक धार्मिक त्यौहार है जो मध्य केरल में देवी काली के मंदिरों में मनाया जाता है। इसे प्राचीन द्राविड़ी देव अवधारणा और पूजा की रीति के अवशेष के रूप में माना जाता है जिसमें रति (कामवासना), रक्तम् (खून) और लहरी (नशीली भंगिमा) प्रदर्शित किए जाते हैं। वास्तव में यह संगीत, नृत्य, चित्रकला, स्वांग आदि का संयोजन है। पदयानी में सभी ग्रामीण जाति या पंथ के भेदभाव के बिना सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

"कोलामेझुतू (मुखौटे पेंट करना), कोलम तुल्लाल" (नृत्य), "कोलप्पत्तु" (गायन), तटपुमेलम (संघात), विनोदम् (प्रहसन) पदयानी के अनिवार्य अंग हैं। "कोलम" लोक देवता हैं जो कुदरती रंगों से सुपारी के अच्छी तरह से तैयार किए गए हरे पत्ते के आवरण पर बनाए जाते हैं। मुखौटा पहने ढोल की धुन पर गाते, नाचते सभी ग्रामीण ईश्वर से समृद्धि लाने, शैतानों के बुरे प्रभाव को नष्ट करने, भरपूर फसल होने और इसी तरह की प्रार्थना करते हैं। पदयानी गांव और ग्रामीणों दोनों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए हर वर्ष मनाई जाती है।

केरल

Padayani

'Padayani' is a ritualistic festival celebrated in temples devoted to the Goddess Kali in Central Kerala. It may be regarded as the remains of ancient Dravidian God concept and mode of worship that offers Rati (lust), Raktham (blood) and Lahari (toxic mood). Actually this is a combination of music, dance, painting, satire etc. In Padayani all the villagers take active part without the difference of caste or creed.

'Kolamezhuthu' (painting masks), 'Kolam Thullal' (dance), 'Kolappattu' (singing), 'Thappumelam' (Percussion), 'Vinodam' (satire), are the essential parts of Padayani. 'Kolams' are folk deities drawn on well processed green areca leaf sheathed with natural colours. Bearing masks made of these singing, dancing with the tune of drums, the whole villagers pray to God to bring in prosperity, to eradicate the ill effects of wicked deities, to ensure goodies from crops and so on. Padayani is celebrated annually for the protection and prosperity of both village and villagers.

Kerala

21

मिजोरम का हस्तशिल्प

इस युग में जब एक बटन दबाकर बहुत से काम किए जा सकते हैं, ऐसे में नवीनता की खोज करना अवश्य ही सार्थक है। मिजोरम हस्तशिल्प के उत्पाद इसका प्रमाण हैं। केवल हाथ से बुनी हुई आकर्षक हस्तशिल्प वस्तुओं से बुनकरों, शिल्पकारों तथा उद्यमियों के कौशल का सम्मिश्रण प्रदर्शित होता है। ये उत्पाद सचमुच में परंपरागत कला और शिल्प तकनीक का प्रतिबिंब हैं। मिजोरम में हस्तशिल्प उद्योग मुख्य रूप से बेंत और बांस पर आधारित है। बांस और वस्त्र शिल्प बेंत विशिष्ट प्राकृतिक संसाधन और सामान है जो राज्य में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। वर्षों से विकसित कौशल को बिना औपचारिक प्रशिक्षण की सहायता से अन्य शिल्पों की तरह आगे बढ़ाया गया है।

मिजोरम की झांकी में राज्य के हस्तशिल्प का चित्रण है जो मिजो जीवन शैली का आंतरिक हिस्सा है।

Handicrafts of Mizoram

In this era, when a click of a button can do a lot of things, it is indeed worthwhile to look for innovation. The products of Mizoram handicrafts are a testimony to that. The exclusively hand woven and exotic handicraft items represent an amalgam of mastery of the weavers, the craftsmen and the entrepreneurs. The products truly are a reflection of the traditional art and craft techniques. The handicrafts industry in Mizoram is mainly based on cane and bamboo. The bamboo and the textile craft cane are remarkable natural resources and materials found abundantly in the State. The skills, developed over the years have been passed on, like other crafts without the assistance of formal instructions of training.

The tableau of Mizoram depicts the handicrafts of the state which form an intrinsic part of the Mizo life-style.

मिजोरम ***Mizoram***

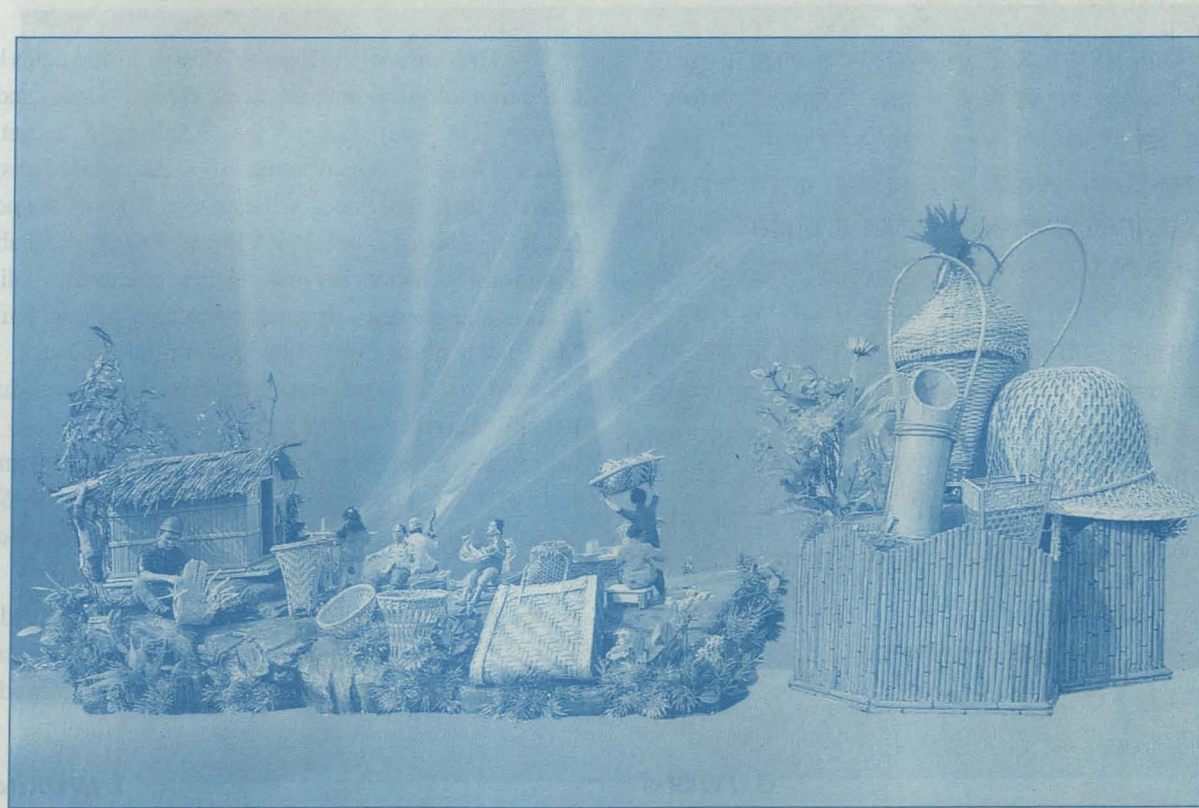

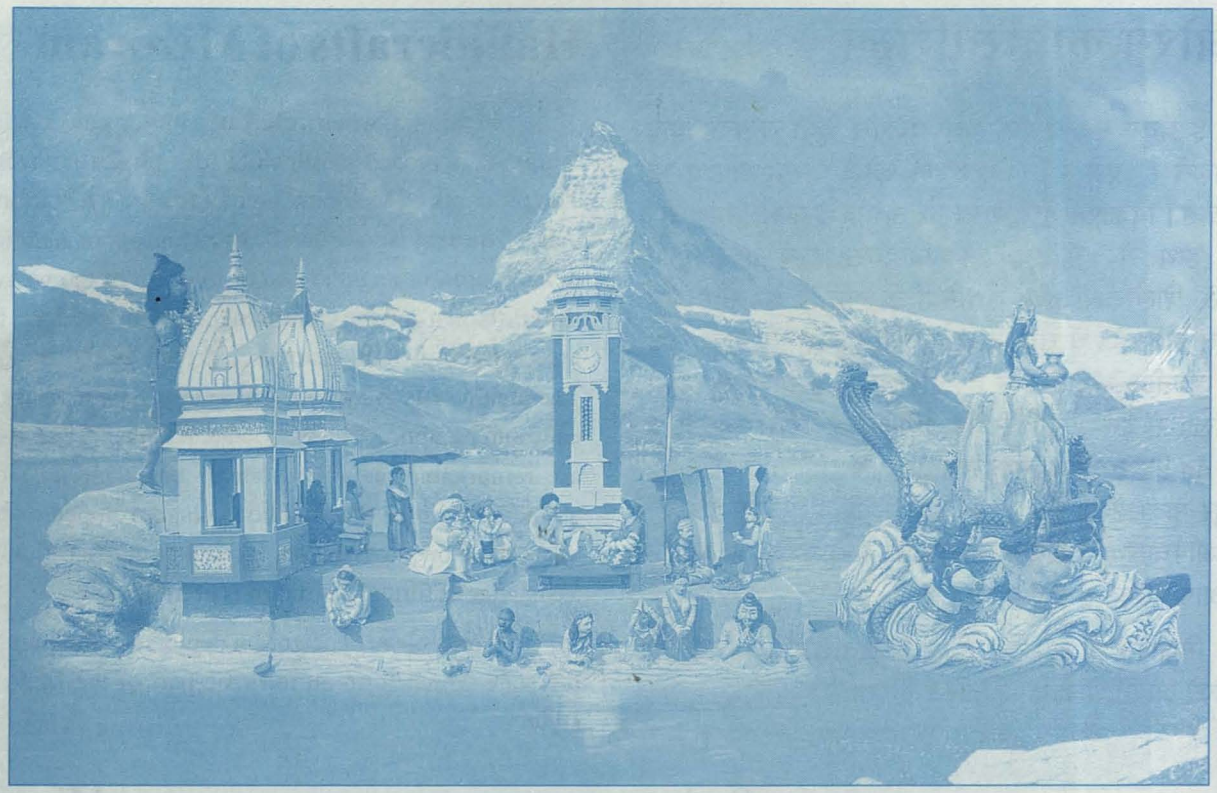

कुंभ मेला–हरिद्वार

कुंभ की उत्पत्ति बहुत पहले पौराणिक काल में हुई था जब देवताओं और असुरों ने अमृत पाने के लिए "क्षीरसागर" का मंथन किया। अमृत के बंटवारे को लेकर उनमें झगड़ा हो गया जिसके कारण अमृत की कुछ बूंदें अमृत कलश से छलक कर हरिद्वार, प्रयाग (इलाहाबाद), उज्जैन और नासिक में गिरी जिससे ये स्थान दिव्य शक्तियों और ऊर्जा से भरपूर हो गए। इसी की याद में कुंभ मेला इन स्थानों पर हर 12वें वर्ष में मनाया जाता है। यह मान्यता है कि जो भी कोई कुंभ के मेले दौरान इन पावन नदियों में स्नान करता है उसे शुद्धता, समृद्धि और मोक्ष प्राप्त होते हैं। यह ऐतिहासिक कुंभ मेला आधुनिक दुनिया का सबसे बड़ा प्रसिद्ध तीर्थ उत्सव है। हरिद्वार महाकुंभ–2010 का पहला, दूसरा और तीसरा शाही स्नान 12 फरवरी, 15 मार्च और 14 अप्रैल 2010 को होगा।

उत्तराखंड की कुंभ मेले की इस झांकी के अग्रभाग में "समुद्रमंथन" और पिछले भाग में हर–की–पैड़ी, हरिद्वार का दृश्य दिखाया गया हैं।

उत्तराखंड

Kumbh Mela-Haridwar

The origin of the Kumbh is very old and dates back to the mythological time when the ***Devtas*** (Gods) and the ***Asuras*** (Demons) churned the 'Kshirsagar' to get the Nectar (Amrit). Distribution of nectar caused dispute between them and due to which some drops of the nectar fell from *Amrit Kalash* at Haridwar, Prayag(Allahabad), Ujjain and Nasik thereby making these places full of divine powers and energy. In commemoration of this, Kumbh Mela takes place every 12th year in these places. It is believed that those who take bath in the holy rivers during Kumbh Mela receive purity, prosperity and salvation. The historical Kumbh Mela is the largest known pilgrimage-festival of the modern world. The 1st, 2nd and 3rd '*Shahi Snan*' at Haridwar Mahakumbh – 2010 will take place on 12th February, 15th March and 14th April, 2010.

In the Kumbh Mela tableau of Uttarakhand, the scene of '*Samudramanthan*' on the front and the scene of Har-Ki-Pairi, Haridwar on the rear side are displayed.

Uttrakhand

23

भारत के वाद्य यंत्र

भारत का संगीत इसकी सांस्कृतिक विरासत का गौरव है और ये वाद्य यंत्र इसके अभिन्न अंग हैं। संगीत, नृत्य और ड्रामा में और पवित्र धार्मिक कार्यों अथवा वैवाहिक रिवाज में भी वाद्य यंत्रों की अनिवार्यता साबित हुई है। भारत के संगीत की धरोहर को संभाले रखने के लिए संगीत नाटक अकादमी (राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और ड्रामा अकादमी) ने 1953 में अपनी शुरूआत से अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से वाद्य यंत्रों की कलात्मकता तथा लोक जागरूकता को बढ़ावा दिया है।

झांकी का मुख्य आकर्षण आभूषणों से अलंकृत वीणा है जिसका संबंध शिक्षा की देवी सरस्वती से है। झांकी में शास्त्रीय वाद्य यंत्र, एक घुमावदार डोरी वाद्ययंत्र, "घुमसा", शंख, एक वाद्य यंत्र अथवा "सुशीरा वाद्य", "तात वाद्य" और "बोर्तल", एक लोलक अथवा इडियोफोन प्रदर्शित किए गए हैं। झांकी में अन्य वाद्य यंत्रों के सौंदर्य की झलक भी प्रदर्शित है।

संस्कृति मंत्रालय
संगीत नाटक अकादमी

Musical instruments of India

The music of India is the pride of its composite cultural heritage, and the instruments that make music are integral part to it. In the performance of music, dance, drama and also in sacred ritual or martial practice, musical instruments have proved to be indispensable. To uphold the India's musical heritage – Sangeet Natak Academy (National Academy, for Music, Dance and Drama) since its inception in 1953, has promoted artistic and public awareness of musical instruments through its varied programmes.

The tableau's main attraction is ornamentally decorated 'Veena', which is associated with Saraswati, the Goddess of learning. The tableau presents the classical musical instruments, the 'Shankha'(Conch), a wind instrument or 'Sushira Vadya', placed over the 'Dhumsa', a bowed string instrument or 'Tata Vadya' and the 'Bortal', a clapper or idiophone. The tableau also captures the beauty of other musical instruments.

Ministry of Culture
Sangeet Natak Academy

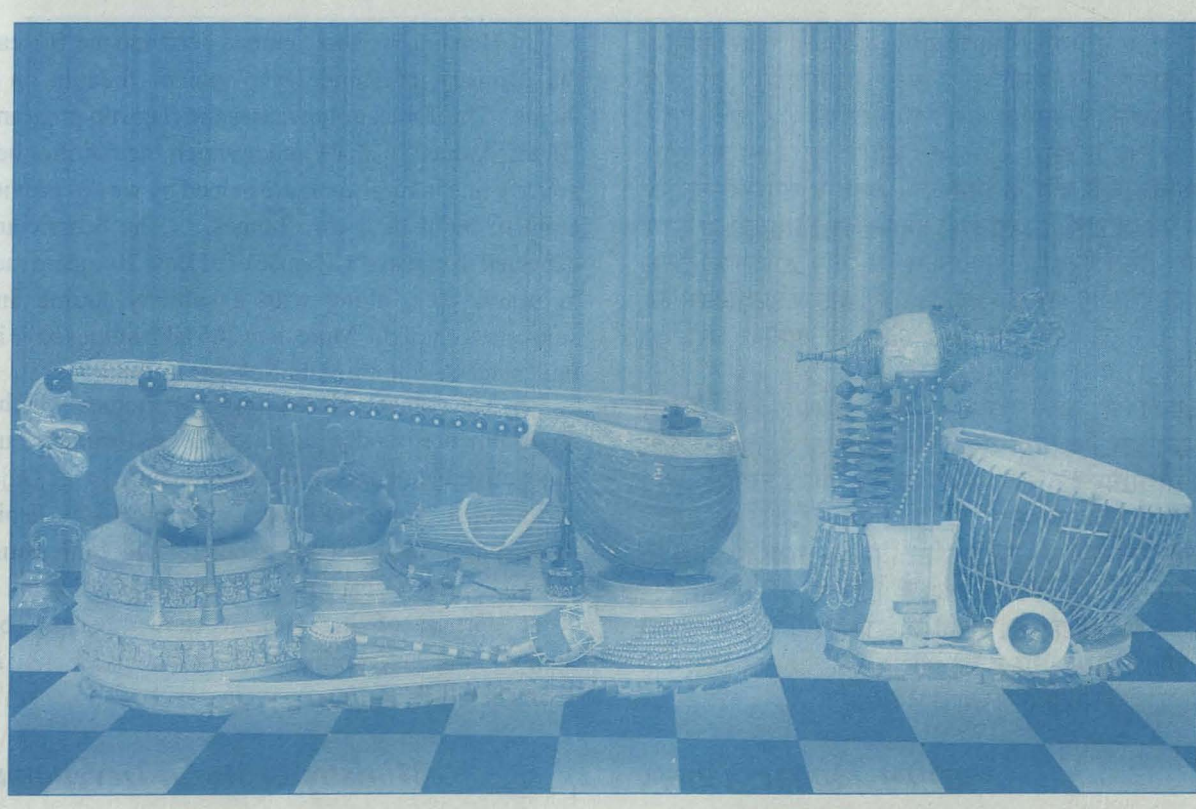

इंदिरा आवास योजना

आवास बुनियादी मानवीय जरूरत है तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय की झांकी इस विषय पर केंद्रित है। झांकी में अग्रणी कार्यक्रम 'इंदिरा आवास योजना', को दर्शाया गया है जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबी की रेखा से नीचे परिवारों की उनके घरों के निर्माण में अनुदान उपलब्ध कराके सहायता की जा रही है। लाभार्थी को स्वच्छ शौचालय के साथ एक धुआं–रहित चूल्हा से युक्त कम–से–कम 20 वर्ग मीटर में एक घर का निर्माण करना होता है। वर्ष 1985 में इस स्कीम की शुरूआत होने से अब तक 206 लाख से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है।

झांकी में कम लागत के घर दिखाए गए हैं जो पर्यावरणानुकूल, आरामदायक तथा टिकाऊ हैं तथा जिनमें अभिनव प्रौद्योगिकी तथा स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल किया गया है। एक गुजराती शैली का घर जिसे मिट्टी के ब्लाकों से बनाया जा रहा है, को निर्माणाधीन दिखाया गया है, साथ ही अन्य तैयार घर को दिखाया गया है जिसमें 'गृह प्रवेश' रस्म को अदा किया जा रहा है। झांकी के अग्रभाग में घोंसला बनाते पक्षियों को दिखाया गया है जो आश्रय की चाह का द्योतक है जो सभी जीवित प्राणियों में व्याप्त है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय

Indira Awaas Yojana

Housing is a basic human need and the Tableau of the Ministry of Rural Development focuses on this theme. The Tableau showcases the flagship programme "Indira Awaas Yojana", under which the families below poverty line in rural areas are helped by way of providing grant to build their own homes. The beneficiary is expected to construct a house of at least 20 square meters in plinth area, along with a sanitary latrine and a smokeless chullah. More than 206 lakh homes have been built since beginning of the Scheme in 1985.

The tableau shows low cost homes which are environment friendly, comfortable and durable, using innovative technologies and local materials. A Gujarati style house, with stabilized-earth blocks is depicted under construction, while another ready built house is shown, with a "Griha-Pravesh" ceremony going on. The front portion of the tableau shows nesting birds, symbolizing the yearning for shelter that is inherent in all living beings.

Ministry of Rural Development

25

शानदार अतीत तथा नए युग की विजय

भारतीय रेलवे अपनी झांकी के माध्यम से आधुनिकता के नवीनतम प्रतीक के साथ विशाल धरोहर को दर्शा रहा है। इसका अर्थ इस तथ्य को दर्शाना है कि भारतीय रेलवे अतीत तथा वर्तमान का सतत् मिश्रण है, भाप के लोकोमोटिव को 'डूरांटो' एक्सप्रेस के एल.एच.बी. कोच के साथ से जोड़ कर दिखाया गया है जो वास्तव में यात्री की सुख–सुविधा को प्रस्तुत करता है। भाप के लोकोमोटिव भारतीय रेलवे की सुविख्यात प्रतिमूर्ति हैं। उन्होंने अपने धैर्य और बल से समय को परास्त किया है। सुविधा तथा गति का पूरा ध्यान रखते हुए 'डूरान्टो' यात्री कोच भारतीय रेलवे के आज के आदर्श – 'सुरक्षा के साथ गति' का द्योतक है।

भारतीय रेलवे ने इस विषयवस्तु को अपने अतीत को प्रस्तुत करने के लिए चुना है। यद्यपि यात्री सुविधा, सुरक्षा तथा प्रचालन की अगली पीढ़ी की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं फिर भी, हमने अपने शानदार अतीत को नहीं भुलाया है। आज हम हमारे कालजयी सफल भाप के इंजन का प्रदर्शन करके हमारे अतीत का उत्सव मना रहे हैं। साथ–साथ उनका कद बढ़ा है।

रेल मंत्रालय

The Glorious Past and Triumph of New Era

Through their tableau, Indian Railways are showcasing their vast heritage along with the latest symbol of modernity. This is meant to represent the fact that Indian Railways are continuous blend of the past and the present, the steam locomotive blends seamlessly into the LHB coach of 'Duranto' Express, which truly represents the ultimate passenger comfort. Steam locomotives are the celebrated icons of Indian Railways. They have defied time with their fortitude and force. The 'Duranto' passenger coach with its emphasis on comfort and speed symbolizes the ideals of Indian Railways' Today - Speed with Safety.

Indian Railways have chosen this theme to represent their past. Though we are fast moving towards the next generation of passenger comfort, safety and operation, we have not forgotten our glorious past. This is the past we are celebrating today by showcasing one of our most successful steam engine of all times. Side by side, they stand tall.

Ministry of Railways

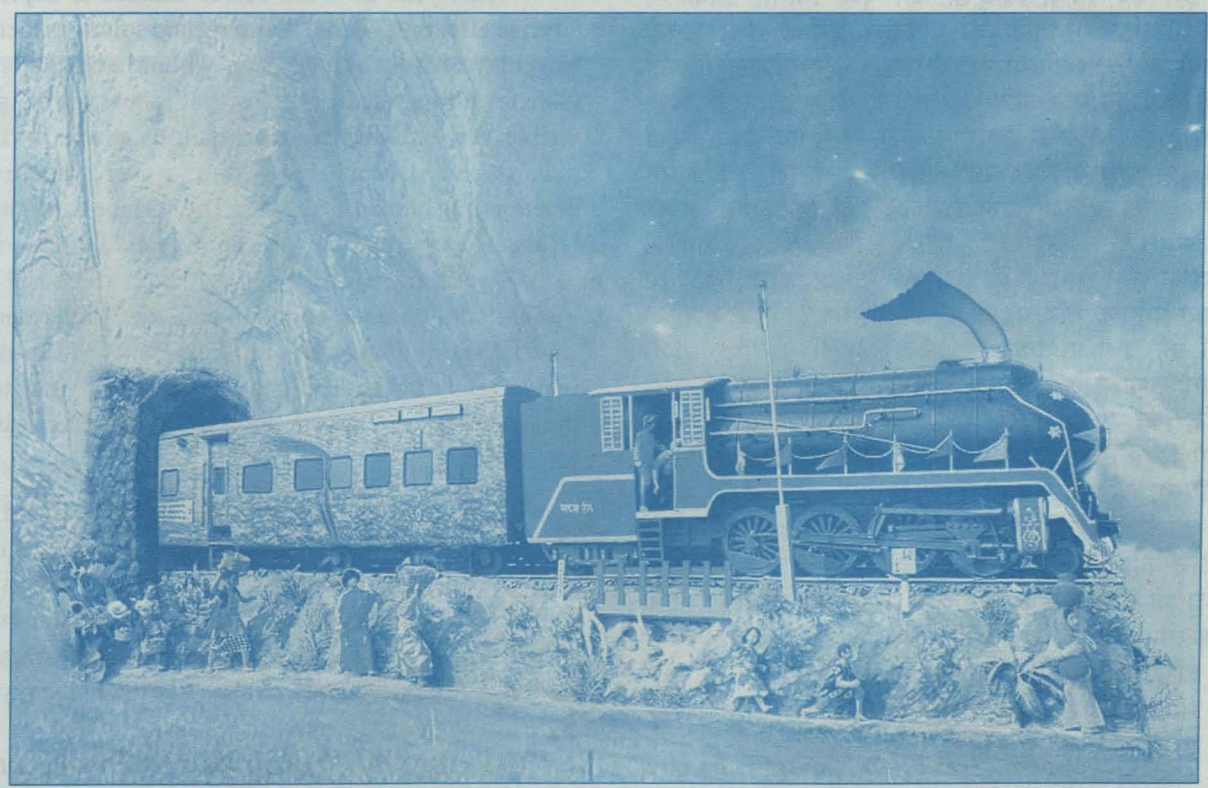

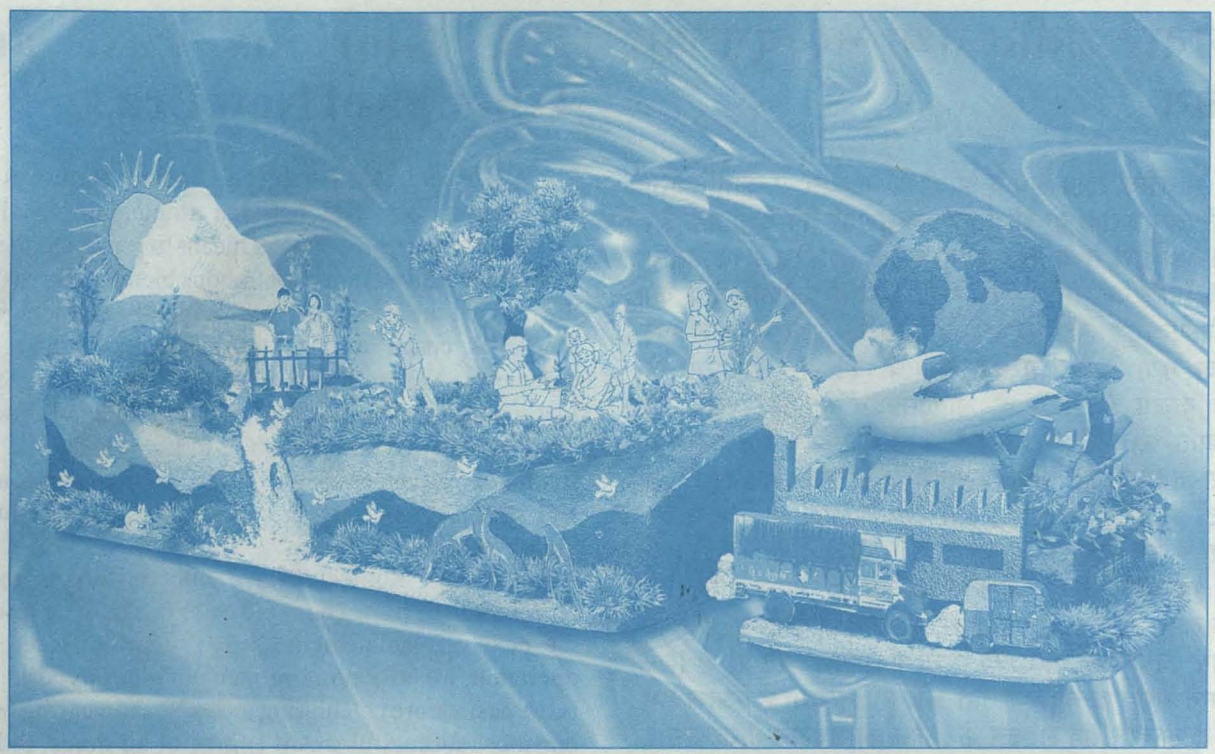

वैश्विक ताप वृद्धि

इस वर्ष सी.पी.डब्ल्यू.डी. की पुष्प निर्मित झांकी में वैश्विक तापमान में वृद्धि के प्रतिकूल प्रभावों तथा उनके समाधानों का चित्रण किया गया है। आजकल मुश्किल से कोई दिन वैश्विक तापमान वृद्धि की कहानी के समाचार के बिना गुजरता होगा। वैश्विक तापमान वृद्धि के प्रभाव दृश्यमान हैं अर्थात् उग्र मौसम, पिघलते ग्लेशियर, सागरों का बढ़ता जल–स्तर, खाद्य तथा जल संसाधनों का लुप्त होते जाना, मानव स्वास्थ्य में गिरावट, आदि। झांकी के अग्रभाग में प्रदर्शित जलती हुई पृथ्वी के द्वारा वन–कटाव, औद्योगिक तथा यातायात प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि वैश्विक तापमान वृद्धि के कारणों को प्रदर्शित किया गया है। झांकी के पृष्ठभाग में समाधानों तथा उन चीजों को दर्शाया गया है जो हम वैश्विक तापवृद्धि को रोकने के लिए कर सकते हैं अर्थात् नए वृक्षारोपण, विद्यमान वृक्षों का संरक्षण तथा कार्बन डाइऑक्साइड आदि में कमी करना।

झांकी द्वारा दिया गया संदेश बिलकुल स्पष्ट है कि सबको न केवल पृथ्वी को बचाने अपितु वैश्विक तापवृद्धि से मानवता को भी बचाने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए। यदि वैश्विक तापवृद्धि नहीं रुकती है तो स्थिति और अधिक भयावह होती चली जाएगी, स्थलाकृतियां जलमग्न हो जाएंगी और अंततः मानवता और पृथ्वी खतरे में पड़ जाएंगे।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

Global Warming

This year CPWD's Floral Tableau is depicting adverse effects of Global Warming and solutions thereto. Nowadays, hardly a day goes by without a news story of global warming. Adverse effects of global warming are visible viz. extreme weather, melting glaciers, rising oceans, vanishing food and water resources, deteriorating human health etc. The burning earth shown on the front part of the tableau defines the reasons of global warming namely, deforestation, industrial and traffic pollution, land pollution etc. The trailer portion shows the solutions and the things that we can do to reduce global warming viz. plantation of new trees, preservation of existing trees and reducing carbon dioxide etc.

The message given by the tableau is loud and clear that all out efforts should be made by all of us to save not only the earth but the humanity also from the global warming. If global warming doesn't stop, the situation will continue to worsen further, landmarks will disappear under water and ultimately the humanity and the earth will be endangered.

Central Public Works Department

27

पन–बिजली से ऊर्जावान भारत

जब समस्त सभ्य संसार कार्बन उत्सर्जन को घटाकर वैश्विक तापवृद्धि से निपटने के अभियान की टंकार से गुंजायमान है तो ऐसे में पनबिजली उत्पादन को एक स्वच्छ विकास तंत्र के रूप में महत्व मिल जाता है जो कि पर्यावरणीय संरक्षण को प्रोत्साहित करता है। विद्युत मंत्रालय के तत्वावधान एन.एच.पी.सी. की झांकी में 'पनबिजली से ऊर्जावान भारत' संदेश को उद्घोषित किया गया है तथा विकास और पर्यावरण के संतुलन में स्वच्छ पन–बिजली के अनेक लाभों का चित्रण किया गया है। विद्युत–चालित आर्थिक वृद्धि करने की दिशा में राष्ट्रीय पन–बिजली विकासक, एन.एच.पी.सी. द्वारा शुरू की गई निगमित सामाजिक पहलों तथा स्थानीय क्षेत्र, स्कूल परियोजनाओं, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, ग्रामीण कृषि में बिजली से प्रचालित पम्प–घरों तथा भारतीय ग्रामीण जीवन–शैली के समृद्धिकरण का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है।

शिखर पर बैठी तितली वाले विद्युत ऊर्जा के प्रतीक को संभाले हुए एक प्रतीकात्मक विशाल मानवीय हाथ, प्रकृति के साथ पन–बिजली की सद्भावना तथा मैत्रीपूर्ण एक नवीन कलात्मक अभिव्यक्ति है।

विद्युत मंत्रालय
राष्ट्रीय पन–बिजली शक्ति निगम

Energising India with Hydro-power

When the entire civilized world is abuzz with the crusade of combating Global Warming by reduction in Carbon Emission, hydro-electricity generation gains importance as a Clean Development Mechanism (CDM) that promotes environmental protection. The tableau of NHPC under the aegis of Ministry of Power proclaims the message "Energising India with Hydro-power" and portrays the multi benefits of clean hydro power in balancing development and environment, Corporate Social Responsibility (CSR) initiatives pursued by the national hydro-power developer, NHPC, towards promoting power driven economic growth and enriching the Indian rural life style by supporting local area school projects, vocational training centres, electrically operated pump houses in rural agriculture, etc. are highlighted.

A symbolic big human hand holding the symbol of electric energy with a butterfly sitting atop of it is a novel artistic expression of hydro-power's harmony and friendliness with nature.

Ministry of Power
National Hydro-electric Power Corporation

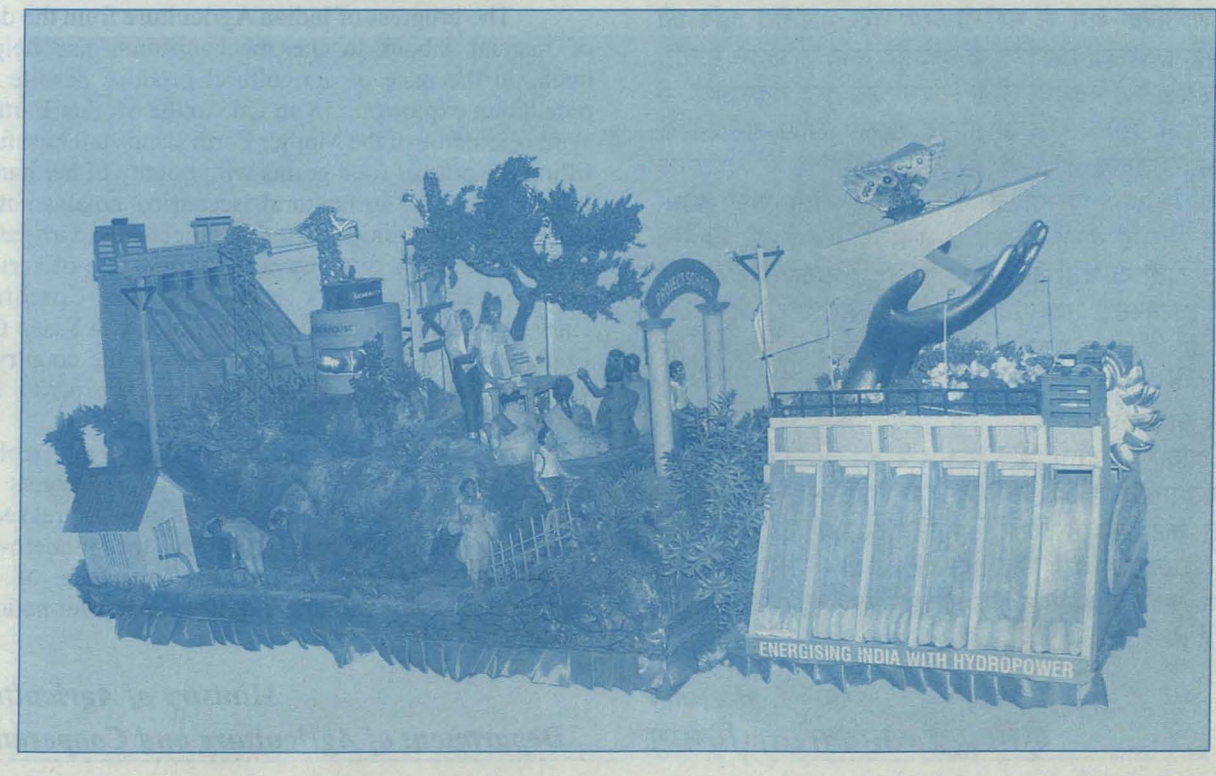

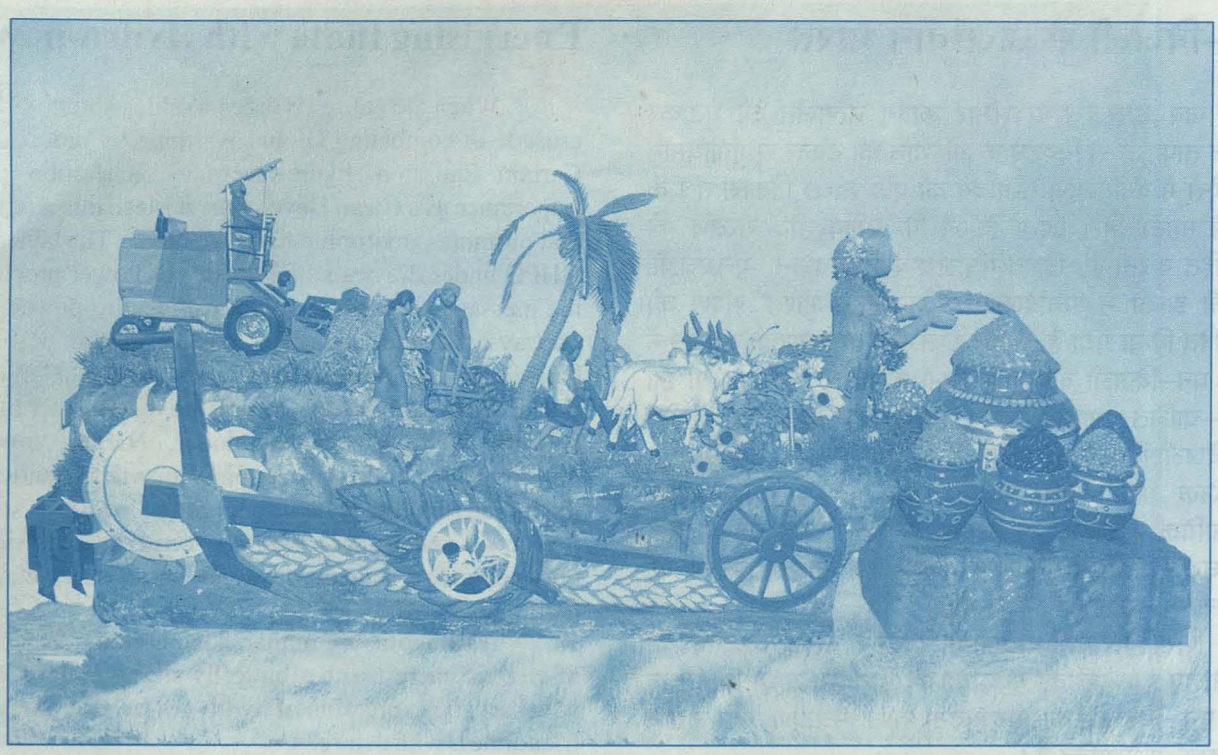

किसान की उन्नति – देश की प्रगति

शारीरिक श्रम से मशीनीकरण तक भारतीय कृषि की प्रगति से जनसंख्या विस्फोट के बावजूद कृषि उत्पादन में गति बरकरार रखने में मदद मिली है। "एन ओड टु द मदर अर्थ" में मातृभूमि की प्रतीक मूर्ति आशीर्वाद स्वरूप खाद्य अनाजों के बर्तन अपने उदार हाथों से भर रही है। भारत के आधुनिक परिदृश्य में आज पारंपरिक रूप से की जाने वाली खेती यंत्रीकृत सिंचाई वाली हो गई है तथा फार्म मशीनरी विभिन्न यंत्रीकृत खेती के यंत्रों का अनुप्रयोग प्रदर्शित करती है जिसमें मिश्रित हारवेस्टर तथा किसान कॉल सेंटरों के दूरसंचार संपर्कों को दिखाया गया है जो देश भर के किसानों के लिए संतोषजनक उपज, प्रगति, समृद्धि और खुशहाली सुनिश्चित करने में सहायक हैं।

झांकी के दोनों ओर बैलगाड़ी का पहिया विकास के पहिए का प्रतीक है और कृषि क्षेत्र के लगातार आगे बढ़ने को प्रदर्शित कर रहा है जिसे आधुंनिक समय का औद्योगिक पहिया भी कहा गया है, जो राष्ट्र की प्रगति के लिए कृषि क्षेत्र के साथ–साथ औद्योगिक क्षेत्र के तालमेल का महत्व प्रदर्शित करता है।

कृषि मंत्रालय
कृषि एवं सहकारिता विभाग

Kisan ki Unnati – Desh ki Pragati

The progress of Indian Agriculture from the days of manual labour to the mechanisation has helped maintain the pace of agricultural produce despite the population explosion. In an Ode to the Mother Earth, a symbolic statue of the Mother Earth stands tall blissfully filling the pots of food grains with bounty of her hands. India's modern agricultural scenario, amalgamating traditional ploughing with today's mechanised irrigation and farm machinery portrays the application of various mechanized agri-tools including the Combined Harvester and telecommunication links with Kisan Call Centers which helps the farmers across the country in securing satisfactory yield, progress, prosperity and happiness.

The cartwheel on the sides of the tableau symbolises the wheel of fortune and represents the continuous forward movement of the agricultural sector which is aptly complemented by the modern-day industrial wheel, signifying the interface of the agricultural sector with the industrial sector for national progress.

Ministry of Agriculture
Department of Agriculture and Cooperation

29

वन्य अधिकार अधिनियम, 2006 के द्वारा जनजातियों का सशक्तीकरण

जनजातीय कार्य मंत्रालय की इस झांकी में वन्य अधिकार अधिनियम, 2006 के जरिए देश की जनजातीय आबादी को एक शक्ति संपन्न जनजातीय महिला की जीवंत मूर्ति के माध्यम से चित्रित किया गया है जो एक ठेठ कृषि हस्त औजार लिए हुए है, उसने जनजातीय आभूषण पहन रखे हैं और उसने लघु वन उत्पादों से युक्त एक टोकरी को अपनी पीठ पर रखा हुआ है जो उसके अधिकार संपन्न जीवनयापन को दिखाता है। सीमान्त जनजातीय आबादी के जीवनयापन के विभिन्न रूपों में कानूनी संस्वीकृति के साथ भूमि खेती, मत्स्य पालन, वन वृक्षों से शहद एकत्र करना, लघु वन उत्पाद का अधिकार, पशु तथा कुक्कुट पालन चित्रित किए गए हैं जो सरकार द्वारा किए गए उपायों पर जनजाति आबादी के भरोसे और विश्वास को प्रदर्शित करते हैं।

एक जनजातीय व्यक्ति की बड़ी मूर्ति जिसमें वह वन भूमि का एक टुकड़ा लिए हुए है, इस बात का प्रतीक है कि आज वन भूमि में जनजातीय आबादी पूरी सुरक्षा भावना और स्वामित्व के साथ अधिकार संपन्न तरीके से रहती है।

जन–जातीय कार्य मंत्रालय

Empowering Tribals through Forest Rights Act, 2006

In the tableau of Ministry of Tribal Affairs, the empowerment of the country's tribal population with Forest Rights Act, 2006 is depicted through a larger-than-life sculpture of an empowered tribal woman, holding a typical agricultural hand tool, adoring tribal jewellery and carrying Minor Forest Produce in a basket on her back as her rightful livelihood. The various elements of livelihood of the marginal tribal population including forest land cultivation with legal sanctions, fishing, honey-collection from forest trees, right to minor forest produce, animal and poultry breeding are portrayed reflecting the confidence and faith of the tribal population on the measures taken by the Government.

The larger-than-life bust figure of a Tribal man holding on to a piece of forest land symbolises the sense of security and ownership that the Tribal Population enjoys today on Forest Lands rightfully.

Ministry of Tribal Affairs

30

राष्ट्रमंडल खेल – दिल्ली 2010

दिल्ली, 2010 में 19वें राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी कर ही है जो 1982 में भारत में आयोजित एशियाई खेलों के बाद होने वाली अनेक तरह के खेलों की सबसे बड़ी खेल प्रतिस्पर्धा होगी। युवा कार्यक्रम मंत्रालय अपनी झांकी के माध्यम से अपनत्व, प्रेम, मैत्रीभाव व खेल भावना को दिल्ली में 71 देशों और राष्ट्रमंडल क्षेत्रों से पधारे खिलाड़ियों, भागीदारों और दर्शकों के समक्ष प्रदर्शित करेंगे। इन खेलों के लिए विकसित किए जा रहे अत्याधुनिक खेल स्टेडियमों की झलक जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम के आदर्श से मिल रही है।

इस झांकी के माध्यम से इस बात पर महत्व डाला गया है कि राष्ट्र मंडल खेल – 2010 पहली बार आयोजित होने वाले "हरित खेल" होंगे। इन खेलों का शुभंकर **"शेरा"** हमें उस संवेदनशील परिवेश का स्मरण दिला रहा है जिसमें हम रह रहे हैं तथा इसकी प्रजातियों की रक्षा एवं इसके संकटापन्न नाजुक पर्यावरण संतुलन के लिए हमारे दायित्व क्या हैं। दिल्ली दर्शकों को अपनी समृद्ध संस्कृति एवं विरासत के आनंददायक परिवेश को प्रदर्शित करेगी जिसमें आधुनिक युग के भव्य निर्माण भारतीयों के आतिथ्य भाव से आपूरित हैं जो कि अतुल्य भारत की पहचान है।

युवा कार्यक्रम तथा खेलकूद मंत्रालय,
खेलकूद विभाग

Commonwealth Games – Delhi 2010

Delhi is going to host the XIX Commonwealth Games in Delhi in 2010, the biggest multi-disciplinary, mega-sporting event to be held in India after the Asian Games in 1982. The Ministry of Youth Affairs through the tableau is presenting the feeling of warmth, affection and spirit of sportsmanship that the Games will generate among athletes, participants and visitors from 71 nations and Territories of the Commonwealth in Delhi. The state-of-the-art sports stadia, which are being developed for the Games is depicted through the iconic Jawaharlal Nehru Stadium.

The tableau also emphasizes that CWG – 2010 will be the first ever "Green Games". **"Shera"** the mascot of the Games, reminds us of the fragile environment in which he lives and our responsibility towards protecting his species and the delicate ecological balance that is under threat. Delhi will present to the visitors an exhilarating milieu of rich culture and heritage, with the elegant structures of a modern era, complemented by Indian hospitality that is a trademark of Incredible India.

Ministry of Youth Affairs and Sports
Department of Sports

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2009 के विजेता

नाम	राज्य
मास्टर गौरव सिंह सैनी*	हरियाणा
बेबी मैबम प्रीति देवी**	मणिपुर
मास्टर करण निषाद***	उत्तर प्रदेश
मास्टर विजीथ वी****	केरल
स्वर्गीय कु. रानू मिश्रा****	उत्तर प्रदेश
मास्टर नरेन्द्र सिंह नटवर सिंह सोलंकी****	गुजरात
मास्टर उद्देश आर. रामनाथकर	गोवा
कु. थोई थोई खुमांथम	मणिपुर
मास्टर जोनुनसांगा	मिजोरम
मास्टर सुजीत आर.	केरल
मास्टर अमल एन्टनी	केरल
कु. कृष्णाप्रिया के.	केरल
स्वर्गीय मास्टर दीपक कुमार कोरी	उत्तर प्रदेश
मास्टर दीजेक्षण सीयम	मेघालय
कु. वैशालीबेन संभूभाई सोलंकी	गुजरात
मास्टर लालरम्माविया	मिजोरम
कु. रेखा कालिंदी	पश्चिम बंगाल
कु. सुनीता महतो	पश्चिम बंगाल
कु. अफसाना खातून	पश्चिम बंगाल
मास्ट सुजित कुमार पी.	केरल
मास्टर योगेश कुमार जांगीड	राजस्थान

* भरत पुरस्कार

** गीता चोपड़ा पुरस्कार

*** संजय चोपड़ा पुरस्कार

**** बापू गयाधनी पुरस्कार

Winners of the National Award for Bravery – 2009

Name	State
Master Goarv Singh Saini *	Haryana
Baby Maibam Prity Devi **	Manipur
Master Karan Nishad ***	Uttar Pradesh
Master Vijith. V.****	Kerala
Late Km. Ranu Mishra ****	Uttar Pradesh
Master Narendrasinh Natvarsinh Solanki ****	Gujarat
Master Uddesh R. Ramnathkar	Goa
Km. Thoi Thoi Khumanthem	Manipur
Master Zonunsanga	Mizoram
Master Sujith R.	Kerala
Master Amal Antony	Kerala
Km. Krishnapriya K.	Kerala
Late Master Deepak Kumar Kori	Uttar Pradesh
Master Dijekshon Syiem	Meghalaya
Km. Vaishaliben Sambhubhai Solanki	Gujarat
Master Lalrammawia	Mizoram
Km. Rekha Kalindi	West Bengal
Km. Sunita Mahato	West Bengal
Km. Afsana Khatun	West Bengal
Master Sujith Kumar P.	Kerala
Master Yogesh Kumar Jangid	Rajasthan

* Bharat Award

** Geeta Chopra Award

*** Sanjay Chopra Award

**** Bapu Gayadhani Award

32

बच्चों की प्रस्तुति

डोलू कुनिथा

दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावूर कर्नाटक 'डोलू कुनिथा' कला का प्रदर्शन कर रहा है। इस कला का प्रदर्शन करने वाले स्कूली बच्चे बंगलौर के तीन स्कूलों के हैं अर्थात् सेक्रेड हार्ट गर्ल्स हाई स्कूल, जीवन बीमा नगर, गर्वमेंनट हाई स्कूल, जीवन बीमा नगर और आर. वी. बालिका उच्चतर विद्यालय, जयनगर। प्रधान कला के रूप में इस नृत्य को लोक नृत्यों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसमें प्रदर्शन के दौरान दृश्यगत विविधता के साथ कौशल की जटिलता के दर्शन होते हैं। क्योंकि इस नृत्य के लिए शारीरिक शक्ति और धैर्य–क्षमता का होना आवश्यक है अतः सौष्ठव कद–काठी और ऊँची सहनशक्ति वाले लोग ही इसे कर सकते हैं। इसकी पृष्ठभूमि में हम ताल, तप्पाड़ी, गांग और बांसुरी को ऊँची ध्वनि में बजते हुए देख रहे हैं। इन वाद्ययंत्रों का प्रयोग दोलू के सघन दोलनों को और अधिक तेज करने के लिए किया जाता है। डोलू का एक लघु रूप, जिसे हाथ में लेकर जाया जा सकता है और जिसे बजाया जा सकता है, को एक अलग किस्म के गीत जिसे डोलू गीत या डोलू ढोल गीत कहते हैं, के साथ अधिकतर प्रयोग में लाया जाता है।

विरामहीन प्रवाह

इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति राष्ट्र की आन–बान के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाले हमारे जवानों के बलिदान का प्रतीक है। यह हताश हुए लोगों के लिए आशा की किरण तथा देश के आर्थिक, सामाजिक, प्रौद्यगिकी एवं सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में करामात की चाहत रखने वाले लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राष्ट्रमंडल खेल–2010 से निश्चित रूप से हमारे भागीदारों को क्रीडा एवं खेल के क्षेत्र में नई ऊँचाई हासिल करने का अवसर प्राप्त होगा। हर क्षेत्र में अतुल्य भारत के लोगों को अमर जवान ज्योति की सतत् प्रेरणादायी, अनवरत देदीप्यमान ज्योति पर गर्व है जो समृद्ध जीवन और अनुशासन पर आधारित नए युग में आगाज़ के लिए प्रतिबद्ध है।

कमल मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल, मोहन गार्डन, नई दिल्ली और वंदना इंटरनेशनल सीनियर सैकेंडरी स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली के छात्र 'विरामहीन प्रवाह' नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं।

Children's Pageant

Dollu Kunitha

The South Zone Cultural Centre Thanjuvur presents 'Dollu Kunitha' Art Form of Karnataka. The school children performing the art are drawn from the three schools of Bangalore viz. Sacred Heart Girls High School, Jeevan Bima Nagar; Government High School, Jeevan Bima Nagar and R.V. Girls High School, Jayanagar. As a major form of art, this dance occupies the place of pride among folk dances. It provides both spectacular variety and complexity of the skills in the process of demonstration. Since this dance demands strength, muscle power and the spirit of endurance, only well-built sturdy persons of stamina alone can take to it. Against the background, we have 'Tala', 'Tappadi', 'Gong' and 'Flute', raised to high-pitched tenor. These instruments are used to reinforce the rich vibrations of 'Dollu'. A miniature model of Dollu, easy to carry in hand, and handle it for beating is often employed while singing a distinct class of songs Dollu Songs/Dollu drums Songs.

Viraamheen Pravaah

Amar Jawan Jyoti at India Gate is the symbol of sacrifice of our Jawans who laid their lives for the glory of the nation. It is a ray of hope for the disappointed and a source of inspiration for those who wish to perform miraculously in the field of economic, social, technological and cultural development of the country. Common Wealth Games 2010 will certainly provide an opportunity to our participants to scale new heights in games and sports. The incredible Indians are proud of the ever inspiring incessant flames of Amar Jawan Jyoti, which is bound to usher in a new era of disciplined and prosperous life.

The students of Kamal Model Senior Secondary School, Mohan Garden, New Delhi and Vandana International Senior Secondary School, Dwarka, New Delhi present a cultural event titled 'Viraamheen Pravaah'.

राजस्थानी लोक–नृत्य

यह राजस्थानी लोक नृत्य है जिसमें एक राजस्थानी लड़की को होली के अवसर पर ढपली की थाप एवं मंजीरे की मधुर ध्वनि, कच्ची घोड़ी की आवाज़, उड़ते गुलाल और घूमर नृत्य करते हुए तिरंगे झंडे को पकड़े हुए तथा समूचे राष्ट्र को गणतंत्र दिवस और होली की शुभकामनाएं देते हुए अपने प्रमी के साथ नृत्य करते हुए दिखाया गया है। यह संगीतमय रंगारंग कार्यक्रम उत्तरी–पूर्वी दिल्ली के तीन विद्यालयों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है जिनके नाम हैं: सर्वोदय कन्या विद्यालय, सी–I, यमुना विहार, सर्वोदय कन्या विद्यालय, सी–II, यमुना विहार एवं सरकारी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजय पार्क, मौजपुर। इस प्रस्तुतीकरण का निर्देशन श्रीमती कविता पाण्डेय ने किया है जिन्हें कथक नृत्य में महारत हासिल है तथा जो लखनऊ घराने से संबन्धित हैं।

Rajasthani Folk-Dance

This is a Rajasthani Folk Dance highlighting a Rajasthani girl dancing with her lover on the occasion of Holi, on the beat of Chang better known as ('Dhapali') along with tinkling of 'Majeere', sound of 'Kacchi Ghodi' beats, spooling gulal in the air and also holding tri-colour strips performing 'Ghoomar' dance and spreading the good wishes of Republic Day and Holi to the entire nation. This musical extravaganza is being presenting by the girl students of the three schools of North East District of Delhi, which are: Sarvodaya Kanya Vidyalaya, C-1 Yamuna Vihar; Sarvodaya Kanya Vidyalaya, C-2 Yamuna Vihar and G. G. S. S. Vijay Park, Maujpur. This presentation is choreographed by Mrs. Kavita Pandey, who has excelled in Kathak Dance and belongs to Lucknow Gharana.

वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सहयोग

सर्वोदय कन्या विद्यालय, समालका, नई दिल्ली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे सांस्कृतिक कार्यक्रम का मुख्य विषय क्रीडा एवं खेल के माध्यम से वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सहयोग को बढ़ावा देना है। क्रिकेट, बाक्सिंग, बैडमिंटन, फुटबाल, हाकी एवं व्यायाम की झांकियों के बीच जहां–तहां प्रदर्शित एरोबिक्स को पांव की थाप एवं जीवंत संगीत के साथ लयबद्ध किया गया है जिससे विद्यार्थियों और वयस्कों को समान रूप से ऊर्जा एवं प्रेरणा प्राप्त होती है। यह झांकी समूचे भारत और विश्व के लोगों को यह संदेश देती है कि 'भारतीय विरासत' और 'अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सहयोग' ही भारतीय लोक चेतना और ताने–बाने के मुख्य आधार हैं। अपने संस्कृति एवं विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए जो हम सभी भारतीयों की शक्ति एवं गौरव है, इक्कसवीं सदी के हमारे बच्चे अब वैश्वीकरण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं जिसने भारत को दुनिया के मानचित्र पर स्थापित कर दिया है।

Globalization, International Peace and Cooperation

The theme of Globalization, International peace and Cooperation promoted through sports and games is the mainstay of the presentation by the students of Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Samalka, New Delhi. The aerobics interspersed with tableaux representing cricket, boxing, badminton, football, hockey and gymnastics have been set to foot tapping and lively music which will energize and motivate the students and adults alike. This item is a massage for all the people of India and the world that "Indian heritage" and "international peace and cooperation" is the mainstay of Indian ethos and fabric. While preserving our culture and heritage which is the strength and pride of all Indians, the children of the 21st century are now paving the way for globalization which has put India on the world map.

34

तमांग सिलो नृत्य

तमांग सिलो नृत्य सिक्किम का लोक नृत्य है जिसे वहां के तमांग समुदाय का संरक्षण प्राप्त है। इस नृत्य को 'दाम्फू' के नाम से भी जाना जाता है। 'दाम्फू' तमांगों का पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र है। इस नृत्य के माध्यम से पहाड़ों में रहने वाले लोगों की खुशमिजाज जीवन–शैली का वर्णन किया जाता है जो उनके त्यौहारों और नृत्यों की भव्यता के रूप में अभिव्यक्त होता है। यह नृत्य मनोरंजन और जीवंतता से भरपूर होता है इसलिए इसे दसैं अथवा दशहरा के अवसर पर किया जाता है। तमांग अथवा 'दाम्फू' नृत्य अनादि काल से प्रचलन में रहा है और इसे युवा तथा वृद्ध जन–समुदाय द्वारा समान रूप से परंपरागत वेशभूषा पहन कर किया जाता रहा है। उत्तर–पूर्व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर के कलाकार इस तमांग सिलो नृत्य का प्रदर्शन कर रहे हैं।

Tamang Selo Dance

Tamang Selo is a Sikkimese folk dance patronized by the Tamang community. This dance is also known as 'Damphu'. 'Damphu' is the traditional musical instrument of the Tamangs. This dance depicts the colourful life-style of the hill people which finds expression in the splendor of their festivals and dances. This dance is full of fun and vigor and hence, it is performed during *Dasain or Dussehra*. The Tamang dance or 'Damphu' dance has since time immemorial been a traditional dance performed by the young and old folk alike in their traditional costumes. The artists from the North East Zone Cultural Centre, Dimapur are presenting the Tamang Selo Dance.

Printed at Indu Cards & Graphics, Chawri Bazar, Delhi-06